अक्तूबर 2003
Rs. 10/-
चन्दामामा

LET'S CELEBRATE
NOVEMBER
OUR SPECIAL MONTH
WATCH OUT FOR THE
CHILDREN'S SPECIAL ISSUE
OF CHANDAMAMA IN NOVEMBER 2003
Exciting stories from child-writers!
Illustrations from child-artists!
Jokes, riddles, games - all from children!
Your favourite comics contributed by a child!
This special issue with more pages of fun for Rs.12/-
FROM KIDS, FOR KIDS
DON'T MISS CHANDAMAMA'S CHILDREN'S SPECIAL ISSUE!
A SPARKLER TO LIGHT UP YOUR DIWALI!!
OCT-03
LIBRARY

चन्दामामा

विशेष आकर्षण

सम्पुट - १०७ अक्तूबर - २००३ सञ्चिका - १०

माया सरोवर

१३

ब्याज के सिक्कों का पेड़

१९

एक ही घर का भिखारी

३५

नमस्कार नारंग

४०

अन्तरङ्गम्

SUBSCRIPTION

For USA and Canada
Single copy $2
Annual subscription $20

Remittances in favour of Chandmama India Ltd.
to
Subscription Division
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097
E-mail : subscription@chandamama.org

शुल्क

सभी देशों में एयर मेल द्वारा
बारह अंक ९०० रुपये
भारत में बुक पोस्ट द्वारा १२० रुपये
अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या
मनी-ऑर्डर द्वारा
'चंदामामा इंडिया लिमिटेड'
के नाम भेजें।

For booking space
in this magazine
please contact :
DELHI
Mona Bhatia :
Ph: 011-26515111 /
26565513 / 26565516
Mobile: 98110-29092
MUMBAI
Sonia Desai :
Ph : 022-56942407 / 2408
Mobile: 98209-03124
CHENNAI
Shivaji :
Ph : 044-22313637 / 22347399
Fax: 044-22312447
Mobile : 98412-77347
email : advertisements
@chandamama.org

© The stories, articles and designs contained in this issue are the exclusive property of the Publishers. Copying or adapting them in any manner/ medium will be dealt with according to law.

संस्थापक
बी. नागिरेड्डी और चक्रपाणि

'तुरन्त भोजन' (फास्ट फूड) : सर्वनाश की ओर बढ़ता कदम

यह कैसी विडम्बना है कि जबकि हमारे पास अपने जीवन को आसान बनाने के लिए कितने सारे साधन हैं, ताके हमें निजी जीवन के लिए अधिक समय मिल सके, फिर भी हमें हमेशा जल्दबाजी रहती है। हमारे पास फोन हैं, मोबाइल हैं, फैक्स और ई.मेल की सुविधाएँ हैं, जिनसे हम तेजी से काम कर और समय बचा कर अधिक अवकाश का आनन्द ले सकते हैं।

यह स्थिति हमारी 'तुरंत भोजन' की संस्कृति में, जो समय की बचत के लिए बनाई गई है, दिन के उजाले की तरह स्पष्ट है। यह सिर्फ विधाता जानता है कि क्या हम जीवन-अवधि को कम करने के लिए समय की बचत कर रहे हैं। अध्ययनों द्वारा यह दावे के साथ कहा जा रहा है कि तुरंत भोजन या कूड़ा करकट, जिसे ठीक ही यह कहा जाता है - न केवल महँगा है बल्कि हमारे स्वास्थ्य को भी हानि पहुँचाता है। पश्चिम जगत, जहाँ से इस संस्कृति को हमने आयात किया है, पहले से ही एक अप्रत्याशित समस्या का सामना कर रहा है। माइकेल मासकरनहस, फूड एण्ड सोसाइटी पॉलिसी फेलो, सेनफ्रांसिसको ने यह प्रश्न उठाया है : ''अमेरिका में मोटापे की समस्या से सारी दुनिया अच्छी तरह परिचित है। लेकिन जब अधिक मात्रा में मांस, पाश्चात्य फास्ट फूड तथा सोडा के ब्रैंड नामों के रूप में अमरीकी खाना भारत में भेजा जा रहा है, तब क्या भारत एक नये जन-स्वास्थ्य संकट को पाल-पोस रहा है? क्या भारत को दो में से यह चुनाव करने के लिए बाध्य होना पड़ेगा कि वह भूख की समस्या को मिटाये या मोटे लोगों की चिकित्सा का प्रबंध करे?'' उसने यह भी टिप्पणी की : ''भारत में सांस्कृतिक परंपराओं तथा कृषि क्षेत्रों की प्रचुर विविधता के कारण स्थानीय अनाजों से बने अनेक स्वास्थ्यवर्द्धक आहार उपलब्ध हैं।''

मोटापे के इस प्रकरण से सबसे पहले बच्चे प्रभावित होंगे। भारत में अभिभावकों को इस चेतावनी को ध्यान में रखना चाहिए ताके हमारा राष्ट्र एक और अभिशाप से ग्रस्त न हो जाये।

सम्पादक : *विश्वम*

Visit us at : http://www.chandamama.org

RESERVE YOUR COPY NOW!

Do you want your children to sharpen their faculties by working on puzzles?
Come to Junior Chandamama for loads of puzzles and games.

Are you looking out for interesting new stories to be read out to the kiddies?
Pick up a copy of Junior Chandamama, and you'll find them there.

Does your child have a taste for colouring and you want to develop the habit?
Junior Chandamama is what you must get for your child.

Want your kid to learn all about the culture and heritage of India?
Only Junior Chandamama can help you.

PAGE AFTER PAGE WILL KINDLE YOUR CHILD'S IMAGINATION

ISSUE AFTER ISSUE, MONTH AFTER MONTH
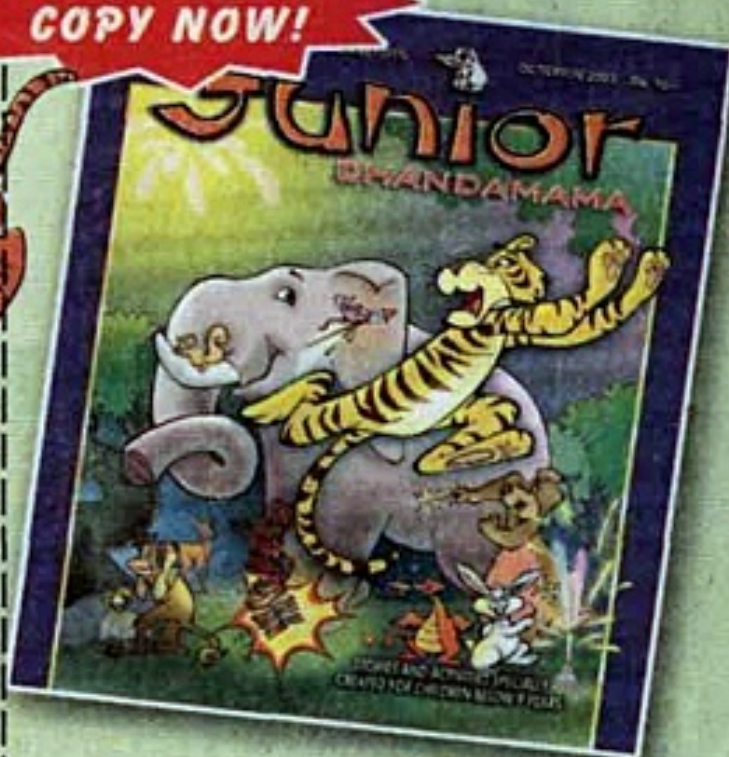
SUBSCRIPTION FORM

Please enrol me as a subscriber of Junior Chandamama. I give below the required particulars:

Name : ....

Address : ....

....

....

PIN Code : ....

I am remitting the amount of Rs.120/- for 12 issues by Money Order/Demand Draft/Cheque No.................... on.................................... Bank .... branch drawn in favour of Chandamama India Ltd., encashable at Chennai (outstation cheque to include Rs.25/- towards Bank Commission).

Place : ....

Date : ....　　　　Signature

गजराजा का फैसला

महासमुद्र के बीच जंगलों व पर्वतों से भरा एक द्वीप था। उसमें भयंकर और साधु जंतु रहा करते थे। पर मानव वहाँ नहीं थे। सब जंतुओं ने मिलकर ऐरावत हाथी को अपना राजा चुना।

ऐरावत बड़ा ही बलिष्ठ और बुद्धिमान था। हर दिन समुद्र तट पर सभा का प्रबंध करता था और द्वीप के जंतुओं के झगड़े को निबटाता था।

इस द्वीप के चारों ओर फैले समुद्र में एक जलकन्या रहती थी। उसकी कमर के नीचे का शरीर मछली का था और कमर के ऊपर का शरीर स्त्री का था। वह अक्सर समुद्र के बाहर घूमा करती थी और जंतुओं के साथ हिल-मिल जाती थी। कभी-कभी ऐरावत की सभा में भी उपस्थित रहती थी।

एक दिन शामको जब सभा हो रही थी, दो भेड़िये एक घायल बकरी की बची को ले आये और उसे गजराजा के सामने रखा। ऐरावत ने बकरी की बची को करुणा से देखा और भेड़ियों से पूछा, "किस बात पर झगड़ा हुआ?"

काले भेड़िये ने कहा, "राजन्, यह बकरी की बची मेरा शिकार है।"

"राजन, यह बकरी की बची बकरे-बकरियों की भीड़ में अपनी माँ के साथ थी। मैं बकरी का स्वांग कर इसे अपनी माता से अलग करके ले आया। उस समय हठात् यह दावा करने लगा कि यह मेरी है।" भूरे भेड़िये ने कहा।

दोनों के बयान सुनकर ऐरावत सोच में पड़ गया। फिर थोड़ी देर बाद कहा, "तुम दोनों उस नारियल के पेड़ के पास जाओ और आपस में खूब सोच-विचार कर लो। फिर लौटकर बताना कि किसका काम न्यायोचित है।"

दोनों भेड़िये नारियल के पेड़ के पास गये। थोड़ी देर तक सोचते हुए खड़े रहे। फिर दोनों सभा में आये और कहने लगे "मेरा दावा ही न्यायसम्मत है।"

ऐरावत ने दोनों को सावधान करते हुए भूरे

- तुकाराम -

भेड़िये से कहा, "अंधेरे में बकरी बनकर स्वांग रचना और बकरी की बच्ची को धोखा देकर ले आना भेडिये के स्वभाव के बिलकुल विपरीत है। इस अपराध के लिए तुम्हें अंधेरी गुफ़ा में एक हफ़्ते तक बंद रहना होगा। यह मेरा फ़ैसला है।"

बस, इस फ़ैसले को सुनाते ही दो बाघ उठकर आये और भेड़िये को गुफ़ा की ओर ले गये।

दूसरे भेड़िये को अब विश्वास हो गया कि फ़ैसला उसी के पक्ष में सुनाया जायेगा।

ऐरावत ने दूसरे भेडिये से बताया, "माँ से संतान को अलग करके तुमने बड़ा बुरा काम किया। इस बकरी की बच्ची को उसकी माँ के सुपुर्द करना तुम्हारी जिम्मेदारी है। इसमें थोड़ी-सी भी ग़लती हुई तो तुम्हें आजीवन कैदी बनाऊँगा।"

जलकन्या ध्यान से यह सब कुछ सुन रही थी। उसने ऐरावत को नमस्कार करते हुए पूछा, "गजराज, तुम्हारे फ़ैसले को सब जानवरों ने स्वीकार कर लिया। पर मेरी एक शंका है।"

"बोलो, वह क्या है?" ऐरावत ने पूछा।

"दोनों भेड़ियों का दावा है कि बकरी की बच्ची उसकी है, परंतु तुमने दोनों के दावे को अस्वीकार कर दिया और अपना फ़ैसला सुनाया। बलवान जंतु निर्बल जंतुओं का शिकार करते हैं और यह सहज है। तब बकरी की बच्ची को शिकार बनाना कैसे अपराध है।"

ऐरावत ने कहा, "मानता हूँ कि शिकार करना वन्य जन्तुओं के लिए सहज है। परंतु उनकी सीमा जंगल तक ही है। जंगल की सीमाओं को पार करके साधु जंतुओं का शिकार करने से अनेक समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। यह अंततः वन्य जंतुओं के लिए ही ख़तरा हो सकता है। यदि मानव वन्य जंतुओं को समाप्त करने पर तुल जाएँ तो उनका जीवित रहना असंभव है। अच्छा इसी में है कि हम अपनी सीमाएँ जानें और तदनुसार व्यवहार करें। इसी वास्तविकता को दृष्टि में रखते हुए मैंने यह फ़ैसला सुनाया।"

जलकन्या यह सुनकर प्रफुल्लित हो उठी और बोली, "गजराज, तुम्हारी बुद्धि अद्भुत है। तुम्हारा विचार उत्तम है।" एक और बार नमस्कार कर वह समुद्र में चली गयी।

दोस्त-दुश्मन

महानंद राजा के दरबार में ऊँचे पद पर था। वह बड़ा ही घमंडी और स्वार्थी था। एक दिन दोपहर को जब वह राजमार्ग से होता हुआ पैदल जा रहा था तब उसके चप्पल की अंगूठी टूट गयी। उसे ठीक करने के लिए वह पास ही के पेड़ के नीचे गया।

उस समय उस पेड़ के नीचे महानंद का बाल्य मित्र विनोद बैठा हुआ था। दोनों ने कुछ समय तक एक ही गुरु से विद्या पायी थी। इसके बाद भाग्य ने महानंद का साथ दिया। पर विनोद ग़रीबी में ज़िन्दगी गुज़ारने लगा।

''आओ दोस्त, तुम्हें देखे कितने ही साल हो गये।'' विनोद ने हँसते हुए कहा। घुटनों तक ही वह धोती पहने हुए था। महानंद को उसका 'दोस्त' कहकर पुकारना अच्छा नहीं लगा। उसने रूखे स्वर में कहा, ''कौन हो तुम? जानते हो, मैं बहुत बड़ा पदाधिकारी हूँ। तुमने मुझे दोस्त कहकर पुकारने की जुर्रत कैसे की?''

पर विनोद ने कहा, ''एक पेड़ ने हम दोनों को आश्रय दिया। इसीलिए मैंने दोस्त कहकर तुम्हें संबोधित किया।'' हँसते हुए ही उसने कहा। ''छाया दोस्ती की राह दिखानेवाली नहीं होती; होते हैं, कपड़े। एक बार मेरे कपड़ों की ओर देखो और देख लो अपने कपड़े भी।'' महानंद ने व्यंग्य-भरे स्वर में कहा।

इसके जवाब में विनोद ने मुस्कुराते हुए कहा, ''घर लौटने पर तुम भी दुपट्टा ही ओढ़कर सोते हो। धूप बड़ी ही कड़ी है। पसीना बहा जा रहा है, फिर भी तुमने अपने बदन को कपड़ों से ढक रखा है। इसी वजह से मुझे तुम पर दया आयी। और दया आती भी है तो दोस्तों पर ही आती है न! दोस्त कहकर पुकारने के पीछे मेरा यही मतलब था।''

- सुधाकर -

विनोद ने ताली बजाते हुए कहा, ''अहा, यह दृश्य कितना मनोहर है! दोस्त, जो हमें ढोते हैं, उन्हें किसी न किसी दिन हमें भी ढोना पड़ता है। क्या गुरुजी की कही यह बात तुम भूल गये? इतने दिनों तक चप्पल तुम्हें ढोते रहे और आज उन्हें तुम ढो रहे हो।''

महानंद से वहाँ रहा नहीं गया। जलते हुए पाँवों की परवाह किये बिना वह वहाँ से चला गया। घर जाने के बाद नये चप्पल पहनकर दरबार में गया। वहाँ राजगुप्त उससे मिला और कहा, ''मित्र, आज का दिन बड़ा ही शुभ है।''

यह राजगुप्त भी महानंद का बाल्य मित्र था। इन दोनों ने और विनोद ने एक साथ गुरु से शिक्षा पायी थी। राजगुप्त जन्म से ही धनाढ्य था। वह जानता ही नहीं था कि ग़रीबी क्या होती है। उसने दूर देशों में जाकर उच्च शिक्षा पायी। उसे दरबार में उन्नत पद भी प्राप्त हुआ। वह दरबार में महानंद से भी ऊँचे पद पर था। फिर भी उसने महानंद के साथ शिष्ट व्यवहार किया और प्यार से बातें कीं।

''तुम्हारे लिए यह शुभ दिन है तो मेरे लिए भी यह शुभ दिन है। पर तुम्हें इसका कारण बताना होगा।'' महानंद ने उत्सुकता भरे स्वर में पूछा।

''महाराज को मैंने एक अच्छी सलाह दी। उससे वे बहुत ही संतुष्ट हुए और उन्होंने मुझसे कहा कि मैं अवश्य ही कुछ माँगूँ। मैंने अपने बाल्य मित्र विनोद के लिए दरबार में कोई अच्छी नौकरी माँगी। उन्होंने तुरंत मान लिया। इसीलिए

महानंद में रोष भर आया। उसने कड़ुवे स्वर में कहा, ''छोड़ो इन बेकार बातों को। क्या तुम हर रोज़ मेरी तरह स्वादिष्ट पकवान खा पाते हो?''

''हर रोज पकवान खाते रहने पर वह मामूली भोजन ही लगने लगता है। इसीलिए लोग त्योहारों व उत्सव के अवसरों पर ही पकवान खाते हैं। मैं भी कभी-कभी स्वादिष्ट पकवान खाता हूँ। इसीलिए वे मुझे बहुत स्वादिष्ट लगते हैं। तुमने कभी महसूस नहीं किया कि पकवान में अब तुम्हें खास स्वाद नहीं मिलेगा?'' विनोद ने पूछा।

उसके इस सवाल पर महानंद नाराज़ हो उठा। उसने तुरंत दोनों चप्पल हाथ में ले लिये और राजमार्ग पर आ गया। पर कड़ी धूप के कारण उससे चला नहीं जा रहा था। वह तुरंत फिर से पेड़ के नीचे आ गया।

आज मेरे लिए शुभ दिन है।'' राजगुप्त ने आनंद-भरे स्वर में कहा।

यह सुनकर महानंद का चेहरा फीका पड़ गया। उसने कहा, ''उस घमंडी को राज दरबार में नौकरी दिलायी? ऐसा मत करो मित्र। उसे नौकरी दिलाओगे तो तुम्हारी बदनामी होगी।''

''तुमने क्या कहा? विनोद घमंडी है? हम तो बचपन में कहा करते थे कि विनोद जैसा शिष्ट ढूँढने पर भी नहीं मिलेगा। क्या भूल गये?'' राजगुप्त ने पूछा।

''वह तो बचपन की बात है। अगर इस बीच तुमने उसे कभी देखा हो तो ऐसा नहीं कहोगे।'' महानंद ने कहा।

इस पर राजगुप्त ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा, ''हाल ही में मैंने उसे राजमार्ग के पास के एक पेड़ के तले देखा। उसने मुझे पहचान लिया और बड़े प्यार से बातें कीं। हम दोनों ने बचपन की उन पुरानी यादों को दोहराया। मेरे पहने रेशमी वस्त्रों की उसने प्रशंसा की। उसने इस पर दुख प्रकट किया कि उसकी आमदनी इतनी नहीं है, जिससे वह सर्दी पड़ने पर ढकने के लिए कंबल, धूप से बचने के लिए चप्पल और पहनने के लिए अच्छे कपड़े खरीद सके। राज दरबार में मैं ऊँचे पद पर हूँ, यह जानकर वह बेहद खुश हुआ।

''मुझसे कोई मदद नहीं माँगी। मेरी अच्छी स्थिति को देखकर उसे ईर्ष्या नहीं हुई। वह सचमुच ही उत्तम व्यक्ति है। मुझे लगा कि ऐसे श्रेष्ठ व्यक्ति को दरबार में नौकरी दिलवा सकूँ तो मेरा सौभाग्य होगा। मेरा विश्वास है कि वह मेरे नाम को और रोशन करेगा।''

'महानंद अंदर ही अंदर जला जा रहा था, पर यह उसने प्रकट होने नहीं दिया। शाम को विनोद का घर ढूँढते हुए वहाँ पहुँचा और उससे मिलकर कहा, ''तुम बड़े ही कपटी हो। तुमने हर तरह से मेरा अपमान किया। तुमने मुझसे ऊँचे पदाधिकारी राजगुप्त की भरपूर प्रशंसा की। तुम ऐसी बुद्धि के हो, इसीलिए दरिद्रता तुम्हारे घर में आसन जमाकर बैठी है।'' यों विनोद की उसने तीव्र रूप से भर्त्सना की।

विनोद ने उसे पूरा बोलने दिया और फिर कहा, ''मैंने जैसे ही राजगुप्त को दोस्त कहकर संबोधित किया तो उसने भी मुझे दोस्त कहकर बुलाया। मेरा कोई भी दोस्त उच्च स्थान पर हो, इससे मुझे खुशी होती है। मैंने तुम्हें भी दोस्त कहा, पर तुमने मुझे दुश्मन समझा। भला दुश्मन से कैसे अच्छा व्यवहार कर सकता हूँ? मेरी व्यवहार शैली मानव-सहज है।''

''तुम झूठ बोल रहे हो। चूँकि राजगुप्त मुझसे बड़ा अधिकारी है, इसलिए उसके साथ तुम अच्छी तरह से पेश आये। इसीलिए वह तुम्हें दरबार में अच्छी नौकरी दिलाने जा रहा है।'' महानंद ने कहा।

विनोद अब तक इस बात से अनभिज्ञ था। इसलिए यह सुनकर उसे आश्चर्य हुआ। फिर उसने कहा, ''राजगुप्त ने मेरी बुरी हालत देखी। उसे मुझपर दया आयी और मेरी सहायता करना चाहा।'' मेरी प्रत्याशा से भी अधिक वह बड़ा है।

विनोद अपनी बातें पूरी करे, इसके पहले ही राजगुप्त ने अंदर आते हुए महानंद से कहा, ''मैंने तुम दोनों की बातें सुन लीं। तुम्हें तो इस बात पर आनंदित होना चाहिए कि अपने एक बाल्य मित्र की भलाई हो रही है। पर तुम उसकी निंदा किये जा रहे हो। यह सर्वथा अनुचित काम है।''

तब जाकर महानंद ने अपनी गलती महसूस की। उस दिन से वह अपने अहंकार से छुटकारा पाने के प्रयत्न में लग गया। और केवल अपने मित्रों का ही मित्र बना नहीं रहा बल्कि शत्रुओं के साथ भी मित्रता निभाने लगा।

माया सरोवर

21

(माया सरोवर की ओर जानेवाले लंगड़े मंगलवर्मा को वृक्ष की डालों में फंसा रथ-सारथी दिखाई पड़ा। उसका आर्तनाद सुनकर सिद्धसाधक और राजा कनकाक्ष भी वहाँ आ पहुँचे। उस वक़्त जलवृकों को उकसाता गैंडे पर सवार एक व्यक्ति आ निकला, तब पेड़ पर से नर वानर उस पर कूद पड़ा। इसके बाद...)

जलवृक राक्षस अपने नेता को ख़तरे में फंसते देख दल बाँधकर आये और अपने गदाओं से नर वानर को अंधा-धुंध पीटने लगे। राजा कनकाक्ष ने अपने सैनिकों को सावधान किया। सिद्धसाधक शूल उठाकर चिल्ला उठा-''जय महाकाल की !'' इसके बाद जलवृकों पर हमला करके उन पर शूल का प्रहार करने लगा।

दो-तीन मिनट तक भयंकर लड़ाई हुई, नर वानर पत्थर की गदाओं के प्रहार से शिथिल हो नीचे गिरने को हुआ। उसी वक़्त जलवृक राक्षसों का नेता अपने वाहन को चतुर्दिक घेरे हुए सैनिकों से आगे लाकर गदा उठाये चिल्ला उठा-''अरे कमबख़्त मानव ! जानते हो, मैं कौन हूँ? माया सरोवर का सर्वाधिपति जलवृकनाथ हूँ। मैं पद्ममुखी नामक कन्या को छोड़ बाक़ी लोगों को अपनी पत्थरवाली गदा की बलि देने जा रहा हूँ।''

नर वानर अभी तक पूर्ण रूप से होश में नहीं आया था। सिद्धसाधक ने सोचा कि उसका

सेवक जलवृक ही उसे होश में ला सकता है। तब उसे पुकारकर बोला, ''अरे वृकभट ! तुम कहाँ हो? मैं नहीं समझता कि नर वानर पर जो चोटें लगी हैं, वे प्राणघातक हैं ! उसे उठाकर खड़ा कर दो।''

''साहब, ऐसे जानवरों में मृत्यु का भय ही प्राण का संचार कर सकता है।'' यों कहकर जलवृक भट नर वानर के निकट पहुँचा, बायें हाथ में उसका कंठ कसकर पकड़ लिया और पत्थर की गदा को उसके सिर पर टिकाकर चिल्ला उठा- ''नर वानर ! तुम्हारा सर फटने जा रहा है।''

दूसरे ही क्षण नर वानर उछलकर खड़ा हो गया और भयंकर गर्जन करते हुए जलवृक भट को अपने हाथों से उठाकर दूर फेंक दिया।

इसके उपरांत जलवृक राक्षसों के नेता को गैंडे पर सवार हो भागने की दिशा में दृष्टि दौड़ाते हुए बोला-''अब उस दुष्ट को कैसे पकड़ें? क्या वह माया सरोवर तक पहुँच गया होगा? वह आख़िर कितनी दूरी पर है?''

वैद्यदेव देवशर्मा उसके समीप जाकर बोला- ''सिद्धसाधक ! माया सरोवर यहाँ से बड़ी दूर तो नहीं है, आप सब मेरे साथ चलिए।''

सिद्धसाधक ने स्वीकृति सूचक सर हिलाया। देवशर्मा रास्ता दिखाते हुए आगे बढ़ा। राजा कनकाक्ष उसके साथ चलते हुए बोला- ''शर्माजी, जल राक्षस केवल पद्ममुखी नामक कन्या को ही प्राणों के साथ छोड़ने की बात कहता है। इसका कारण मेरी समझ में नहीं आ रहा है।''

''महाराज, हमने जो सुना और देखा, इसके आधार पर लगता है कि माया सरोवर पूर्ण रूप से जल राक्षसों के अधीन हो गया है। पद्ममुखी माया सरोवरेश्वर की पुत्री है। जल राक्षसों के नेता का पद्ममुखी को प्राणों के साथ मुक्त करने के पीछे एक रहस्य छिपा हुआ है। राक्षस अपने पुत्र के साथ शायद पद्ममुखी का विवाह करना चाहता है।'' देवशर्मा ने समझाया।

देवशर्मा जब राजा कनकाक्ष से बातें कर रहा था, तभी उधर जयशील अन्य लोगों के साथ मिलकर माया सरोवर पहुँचा। वह सरोवर अत्यंत विशाल था। उसके चारों तरफ़ ऊँचे-ऊँचे पहाड़ तथा भयानक जंगल थे।

जयशील अपनी तलवार से सरोवर के जल को हिलाते हुए बोला-''ओह ! तुम इसी सरोवर

में निवास करते हो ! लेकिन यह बताओ कि इस वक़्त हमलोग मित्र हैं या शत्रु?''

माया सरोवरेश्वर ने चिंतापूर्ण दृष्टि से कांचनमाला की ओर देखा। कांचनमाला लड़खड़ाते स्वर में बोली-''जयशील ! यहाँ पर कोई शत्रु नहीं है। मैंने मकरकेतु के मुँह से सुना है कि आपके हाथ में जो तलवार है, उसे आप को महाकाल के किसी भक्त ने प्रदान किया है। उस तलवार की मदद से आप जलवृक राक्षसों का वध करके उनके बन्दी बने मेरे भाई कांचनवर्मा तथा मामाजी माया सरोवरेश्वर की पुत्री पद्ममुखी को बचाइये।''

''क्या मैं अकेले इतने सारे जलवृक राक्षसों के साथ युद्ध करूँ? मैं कोशिश करके देखूँगा! मैंने तुम्हारे पिता राजा कनकाक्ष को वचन दिया है कि अपने प्राणों का मोह त्यागकर तुम्हें और तुम्हारे भाई को उन राक्षसों से बचाऊँगा। इसकी जिम्मेदारी मेरी है।'' जयशील ने कहा।

जयशील के मुँह से ये शब्द सुनकर माया सरोवरेश्वर आगे आया और उसके दोनों हाथ पकड़ कर बोला, ''जयशील ! तुम यह मत सोचो कि हिरण्यपुर के राजा के बच्चों का अपहरण करके इस सरोवर में लाकर मैंने बड़ा अपराध किया है। मैंने केवल राजकुमार को पकड़ लाने के लिए ही मकरकेतु को भेजा था। मगर वह मूर्ख था, इस कारण उसके साथ कांचनमाला को देख दोनों को बन्दी बनाकर उसने यहाँ पर भेजा। उस वक़्त राजभटों के हाथों से घायल हो मकरकेतु आप लोगों को दिखाई दिया और इस तरह वह और गड़बड़ी का कारण बना।''

''युवराजा का अपहरण करने में तुम्हारा उद्देश्य क्या है?'' जयशील ने पूछा।

''इसमें कोई बहुत बड़ा राज नहीं है। मैं अपनी एक मात्र पुत्री पद्ममुखी का विवाह उसके साथ करके हिरण्यपुर भेजना चाहता था। इसके बाद मैं इस सरोवर को छोड़ कहीं दूर जाने का विचार रखता था। मगर पद्ममुखी ने कांचनवर्मा के साथ विवाह करने से इनकार कर दिया है।'' माया सरोवरेश्वर ने असली बात खोल दी।

जयशील को उसकी बातें विश्वसनीय प्रतीत हुईं। उसने कांचनमाला की ओर देखा। कांचनमाला सरोवर के निकट जाकर एक कमल नाल तोड़ लाई। उसका रस निचोड़कर जयशील के भाल पर बिंदी के रूप में रखकर बोली-

''मामाजी का कहना सर्वथा सत्य है ! मैं अब माया सरोवर का रहस्य खोल देती हूँ। इस सरोवर में उगे कमल नाल के रस को अगर कोई अपने भाल पर मल लेता है तो उसे ज़िंदगी भर पानी में जीने की शक्ति प्राप्त हो जाती है।''

''ओह,ऐसी बात है ! तब तो मैं इसकी जाँच करके देखता हूँ।'' ये शब्द कहते हुए जयशील उछलकर सरोवर के जल में कूद पड़ा।

किनारे पर स्थित माया सरोवरेश्वर, कांचनमाला और मकरकेतु इस आशा से उत्सुकतापूर्वक दो-तीन मिनट ताकते रहे कि जयशील जल पर तिर आयेगा। मगर चार-पाँच मिनट बीत जाने पर भी जब वह जल से बाहर न निकला, तब कांचनमाला घबड़ाकर बोली-, ''आख़िर जयशील को क्या हो गया है? कहीं जलवृक राक्षसों ने पानी के नीचे ताक में रहकर जयशील को बन्दी तो नहीं बना लिया है?'' इसके दूसरे ही क्षण पानी के अंदर कोई हलचल मच गई। जयशील एक जवान जलवृक की गर्दन पकड़कर ऊपर आया और उसे किनारे की ओर घसीट लाया। उसे देखते ही मकरकेतु चिल्ला उठा, ''ओह ! हम जिसे ढूँढ़ रहे थे, वह हाथ लग गया। यह जलवृकों के नेता का पुत्र है। हमारे अनुचरों की जो इसके पिता के हाथ बन्दी बने हैं, अगर कोई हानि हुई तो हम इस युवक के टुकड़े-टुकड़े कर देंगे।''

''अरे दुष्ट ! तुम जल में छिपकर हमारा वार्तालाप सुन रहे थे? तुम्हारा पिता दुष्ट जलवृक नाथ कहाँ है?'' माया सरोवरेश्वर ने तलवार खींचकर कठोर स्वर में पूछा।

''मेरे पिताजी जंगल में स्थित किसी राजा और एक कापालिक का वध करने गये हुए हैं। वहाँ से लौटकर तुम सबको काटकर चील और कौओं का आहार बना डालेंगे।'' जवान राक्षस ने जवाब दिया।

''यह बात बाद को देखी जाएगी ! मगर यह बताओ, इस वक्त कांचनवर्मा और पद्ममुखी कहाँ पर हैं?'' जयशील ने पूछा।

''उन्हें छिपाने का गुप्त प्रदेश सिर्फ़ मेरे पिताजी ही जानते हैं।'' युवक राक्षस ने कहा।

उसी वक़्त दूर पर कोई हलचल मच गई। सबसे आगे गैंडे पर जलवृकनाथ, उसके पीछे जलवृकों का दल पत्थर की गदाएँ उठाकर उस ओर बढ़ते हुए गरज उठे-''तुम लोग अपने-अपने

हथियार फेंककर हमारे अधीन हो जाओ।'' यह धमकी सुनकर जयशील मकरकेतु से बोला,''मकरकेतु, जलराक्षस के पुत्र को तुम अपने जलग्रह की सूंड से ऊपर उठवा दो।''

इस पर मकरकेतु ने पुकारा,''हे जलग्रह, इस युवक को अपनी सूंड से ऊपर उठा दो।'' मकरकेतु के मुँह से ये शब्द निकलने की देरी थी कि जलग्रह ने अपनी सूंड से युवक राक्षस को ऊपर उठाया।

इसके बाद अपनी ओर बढ़नेवाले जलवृकों से जयशील ने कहा, ''अबे दुष्टो ! अगर तुम लोगों ने हम पर हमला करने की कोशिश की, तो सबसे पहले तुम्हारे नेता का पुत्र जलग्रह के पैरों के नीचे दबकर मर जायेगा !''

इतने में उनके पीछे से नर वानर पर सवार हो तेजी के साथ उसी दिशा में बढ़नेवाले सिद्धसाधक ने चिल्लाकर कहा,''महाराज, आप अपने सैनिकों के साथ इन दुष्टों को घेर लीजिए ! देखिये, वहीं जयशील है !'' इन शब्दों के साथ वह उनके निकट पहुँचकर नर वानर से नीचे उतर पड़ा।

जयशील सिद्धसाधक को अपने साथ आये हुए लोगों का परिचय करा ही रहा था, तभी जलवृकों का नेता गैंडे पर उठ खड़ा हुआ और पत्थर की गदा को दूर फेंककर बोला-''मैं और मेरे अनुचर हथियार डालकर आत्म समर्पण कर रहे हैं। बन्दी बने मेरे पुत्र का वध न कीजिए ! मेरे बन्दी बने सभी लोगों को मैं अभी यहाँ बुलवा लेता हूँ !''

उसी समय राजा कनकाक्ष जयशील के समीप पहुँचा। कांचनमाला दौड़कर अपने पिता के पास पहुँची और उससे गले लगकर बोली-''पिताजी, मेरे मामा माया सरोवरेश्वर की कोई हानि न करो। जो कुछ हुआ, उसके लिए वे पछता रहे हैं।''

''माया सरोवरेश्वर की पुत्री पद्‌ममुखी आपकी बहू बनते बनते रह गई !'' जयशील हँसते हुए बोला।

''पद्‌ममुखी का दिल मैं जानती हूँ। वह देवशर्मा के साथ विवाह करना चाहती है !'' कांचनमाला ने कहा।

उसी वक़्त देवशर्मा जलवृक राक्षसों के नेता को बन्दी बनाकर कुछ सैनिकों के साथ जयशील के समीप आया और बोला, ''जयशील, इस दुष्ट ने बन्दी बने पद्‌ममुखी तथा कांचनवर्मा को

ले आने के लिए अपने अनुचरों को भेजा है। इसमें कोई धोखा-दगा तो न होगा न?''

''अगर कोई धोखा हुआ तो यह भी अपने पुत्र की भांति जलग्रह के पैरों के नीचे कुचलकर मर जायेगा !'' जयशील ने कहा।

एक घड़ी के अंदर चार जलवृक राक्षस कांचनवर्मा और पद्ममुखी को वहाँ पर ले आये। उन्हें देख माया सरोवरेश्वर और राजा कनकाक्ष के आनंद की कोई सीमा न रही !

सिद्धसाधक ने महाकाल की जयकार करते हुए पूछा, ''मैंने यहाँ पर जो कुछ सुना, उसके अनुसार यह स्पष्ट है कि पद्ममुखी का विवाह देवशर्मा के साथ निश्चय हो गया है ! पर राजकुमारी कांचनमाला की बात क्या है?''

राजा कनकाक्ष ने जयशील की ओर मुखातिब हो कहा, ''मैंने घोषणा की थी कि अपहरण किये गये मेरे बच्चों को जो वीर लाकर मुझे सौंप देगा, उसे मैं आधा राज्य दे दूँगा। जयशील इस कार्य को साध कर महान वीर बन गया है।''

''कांचनमाला के लिए ऐसा वीर ही योग्य पति सिद्ध हो सकता है। क्यों कांचना? मैं ठीक कह रहा हूँ न?'' सिद्धसाधक ने कहा।

कांचनमाला लजाकर अपने पिता की ओट में जा खड़ी हुई। सिद्धसाधक ठठाकर हँस पड़ा और बोला, ''अब जयशील का कांचनमाला के साथ और देवशर्मा का पद्ममुखी के साथ वैभवपूर्वक विवाह हिरण्यपुर में संपन्न होंगे। अब सब लोग रवाना हो जाइए।''

''सिद्धसाधक! तुम्हारा क्या होगा?'' जयशील ने पूछा। ''मैं इस माया सरोवर के किनारे थोड़े समय तक महाकाल की उपासना करूँगा। यहाँ पर जो भी जलवृक राक्षस और जंगल के नर भक्षी लोग हैं, वे सब मेरे सेवक हैं।'' इन शब्दों के साथ सिद्धसाधक ने अपना शूल ऊपर उठाया।

इसके बाद जयशील, राजा कनकाक्ष तथा माया सरोवरेश्वर अपने-अपने बच्चों व अनुचरों के साथ वहाँ से निकल पड़े। तभी जलवृक राक्षस तथा नर भक्षी दौड़े आये और सिद्धसाधक को घेरकर उसकी जयकार करते हुए नाचने लगे।

(समाप्त)

राजा विक्रम
और वेताल की
नई कथाएँ

ब्याज के सिक्कों का पेड़

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया। पेड़ से शव को उतारा और अपने कंधे पर डाल लिया। फिर यथावत् श्मशान की ओर बढ़ने लगा। तब शव के अंदर के वेताल ने कहा, ''राजन्, बताओ तो सही, क्या कभी तुम्हें अपने प्रयत्न में सफलता मिली? मानता हूँ कि तुम्हारी दीक्षा अमोघ है, लक्ष्य साधने की तुम्हारी धुन प्रशंसनीय है, पर क्या लाभ? संसार में कुछ लोगों का व्यवहार बड़ा ही विचित्र और गूढ़ होता है। ऐसे लोग परोपकार का ढोंग रचते हैं और आत्मबंधुओं तथा रक्त संबंधियों के बीच में फूट डालते हैं, द्वेष भाव उत्पन्न करते हैं। ऐसी मनोवृत्ति के लोगों में से किसी ने तुम्हें प्रोत्साहन दिया होगा, इसीलिए

यह काम करने पर तुम आमादा हो गये। तुम्हें सावधान करने के लिए मैं जड़नाथ नामक एक व्यक्ति की कहानी सुनाने जा रहा हूँ। ध्यान से सुनो।'' फिर वेताल कहानी यों सुनाने लगा :

भद्रपुर में मणिदीप नामक एक धनाढ्य था। उसकी पत्नी वेदवती भी संपन्न परिवार की थी। दोनों स्वभाव से बहुत ही अच्छे और दानशील थे। जो भी सहायता माँगता, मणिदीप 'न' कहे बिना उसकी भरसक सहायता करता था। जो भी घर आते थे, वेदवती, माँ की तरह उनका आदर करती थी।

कहा जाता है कि बैठे-बैठे खाते रहने से कुबेर का खज़ाना भी खाली हो जाता है। अब उनका इकलौता बेटा गुणदीप बड़ा हो गया। उसके लिए पुरखों के घर के अलावा कुछ भी शेष नहीं रह गया।

सच कहा जाए तो गुणदीप को यह मालूम ही नहीं था कि घर में क्या हो रहा है। उसी शहर के जड़नाथ नामक एक मित्र के साथ वैद्य वृत्ति में शिक्षा पाने वह सुदूर प्रांत में चला गया था। अपने बेटे के लिए ही नहीं बल्कि उसके मित्र जड़नाथ के लिए भी आवश्यक धन-राशि मणिदीप नियमित रूप से भेजा करता था। विद्याभ्यास की समाप्ति के बाद जब गुणदीप घर पहुँचा, तब जाकर उसे घर की वास्तविक स्थिति का पता चला।

''बड़ों की दी जायदाद आपने खर्च कर दी और मेरे हाथ में झोंपड़ी थमा दी। मेरी समझ में नहीं आता कि इस स्थिति में अब मैं क्या करूँ?'' गुणदीप ने क्रोध-भरे स्वर में पिता से कह डाला।

''संतान, संपत्ति स्थिर नहीं रहती। हमारी अच्छाई ही सदा हमारी रक्षा करती है। तुम्हारे पिताजी के किये सब कामों के पीछे मेरा भी प्रोत्साहन है। अगर तुम इसे ग़लत ठहराते हो तो यह ग़लती हम दोनों की है। अब भी दूसरों पर आश्रित रहने की कोई ज़रूरत नहीं है। रहने के लिए घर है। वैद्य वृत्ति शुरू कर दोगे तो तुम्हारी काफ़ी आमदनी होगी।'' यों कहकर वेदवती ने बेटे को समझाने की कोशिश की।

गुणदीप वैद्य वृत्ति में लग गया। इससे थोड़ी-बहुत आमदनी होती थी, पर वह संतुष्ट नहीं था। इसका कारण जड़नाथ था, क्योंकि एक साल के पूरा होने के पहले ही वह खूब कमाने लगा और उसकी ख्याति दिन ब दिन बढ़ती जाने लगी।

लोग कहते कि इतना अच्छा वैद्य हमने आज तक नहीं देखा। वे कहते थे कि उसकी दवाओं में शव में भी प्राण फूँकने की शक्ति है। दूर-दूर प्रदेशों से चिकित्सा कराने लोग उसके यहाँ आने लगे। क्रमशः उसकी संपत्ति बढ़ने लगी।

''आप ही के धन से जड़नाथ ने वैद्य विद्या सीखी और आज वह आपके बेटे का प्रतियोगी बन गया। आप ही की वजह से मेरी जायदाद गयी और मेरी वैद्य वृत्ति व्यर्थ साबित हुई,'' यों गुणदीप अपने पिता पर आरोप लगाता गया।

''पुत्र, तुम्हारी आमदनी कुछ कम नहीं है। वैद्य वृत्ति में सेवा ही प्रधान है। अपनी वृत्ति के द्वारा तुम लोगों की सहायता करो, उनके काम आओ। तब प्रजा तुम्हारा आदर करेगी, तुम्हें बड़ा मानेगी। अपने जीवन में जो अभाव महसूस कर रहे हो, वह केवल तुम्हारा भ्रम है।'' मणिदीप ने यों अपने बेटे को समझाया। परंतु, गुणदीप की दृष्टि आमदनी पर ही केंद्रित थी, जो बढ़ने का नाम ही नहीं ले रही थी।

उसी शहर के चावल के व्यापारी महासेन को यह विषय मालूम हुआ। रत्नमाला उसकी इकलौती पुत्री थी। चूँकि उसका कोई बेटा नहीं था, इसलिए वह योग्य वर की खोज में था। वह चाहता था कि शादी के बाद दामाद को घर में रख लूँ और व्यापार उसे सौंप दूँ। वह गुणदीप से मिला और बोला, ''बेटे, तुम्हारे परिवार के बारे में मैं भली-भांति जानता हूँ। तुम्हारे पूर्वजों ने बहुत दान-पुण्य किये। तुम्हारा परिवार सदा संपन्न था। लक्ष्मी देवी की कृपा-दृष्टि हमेशा उनपर थी। पर, तुम्हारे माँ-बाप अभागे हैं। उनके साथ रहोगे तो तुम्हारी हालत में कोई सुधार नहीं होगा। तुम्हारी स्थिति दिन ब दिन दयनीय बनती जायेगी। मेरी बेटी से शादी कर लो और घर जमाई बनकर मेरे घर आकर रहो। अपने माता-पिता को अपने पास न आने देना।'' यों उसने गुणदीप के कान भरे। महासेन की इन बातों ने गुणदीप पर खूब असर डाला। रत्नमाला की सुंदरता पर भी वह रीझ गया।

गुणदीप ने रत्नमाला से विवाह रचाया और घर जमाई बनकर ससुराल चला गया। इस बीच जड़नाथ को मणिदीप की दुस्थिति का पता चला। जब वह उनसे मिलने गया तो दंपति ने कहा, ''हम सुखी हैं। हमारा बेटा चाहता है कि हम उसके साथ ही रहें, पर हमें उसकी ससुराल में रहना पसंद नहीं है। हमारी प्रबल इच्छा है

कि इसी घर से हमारी अर्थियाँ निकलें। हम कहीं और जाना नहीं चाहते।''

जड़नाथ ने कुछ क्षणों तक मौन रहने के बाद कहा, ''यहाँ मेरे आने के पीछे मेरा स्वार्थ है। आपके घर के पिछवाड़े में एक पेड़ है। कोई भी उसका नाम नहीं जानता। पर उस पेड़ के फलों से अद्‌भुत दवाएँ बनायी जा सकती हैं। यह रहस्य हाल ही में मुझे मालूम हुआ। वह तो साल भर फल देता ही रहता है। एक-एक फल की क़ीमत दस-दस अशर्फ़ियाँ होंगी, पर, इतनी क़ीमत मैं चुका नहीं पाऊँगा। आप हर दिन एक फल देंगे तो मैं आपको सोने की एक अशर्फ़ी दे पाऊँगा। परंतु आपको यह लिखकर देना होगा कि आप ये फल किसी दूसरे को नहीं बेचेंगे।''

मणिदीप सोच में पड़ गया। फिर अपने को संभालते हुए कहा, ''जब तक तुमने नहीं बताया, तब तक हम इस पेड़ के महत्व से बिलकुल ही अपरिचित थे। तुम्हारी बतायी क़ीमत पर फल देने तैयार हूँ। लेकिन मेरी समझ में नहीं आता कि यह लिखित रूप में देने की क्या ज़रूरत है?''

''महोदय, इन फलों के महत्व का पता और लोगों को लग जाए तो ख़तरा ही ख़तरा है। बहुत लोग उन्हें खरीदना चाहेंगे। बेचने के लिए आप पर दबाव डालेंगे। अगर उन फलों का उपयोग एक पद्धति में किया जाए तो वह प्राण फूँकनेवाली दवा साबित हो सकती है। किसी और पद्धति में इसका उपयोग हो तो यह जान भी ले सकती है। विष साबित हो सकती है। मुझ जैसे व्यक्ति के हाथ में रहने पर ही इसका दुरुपयोग नहीं होगा। एक बार लिखित रूप में यह अधिकार मुझे दे देंगे तो कोई भी आप पर दबाव डालने की चेष्टा नहीं करेगा।'' जड़नाथ ने यों उन्हें समझाया।

मणिदीप ने जड़नाथ के कहे मुताबिक़ लिखित रूप में यह अधिकार उसे दे दिया। उस दिन से मणिदीप की दशा में कायापलट हो गया। वह आराम से ज़िन्दगी काटने लगा और ज़रूरतमंदों की मदद भी करने लगा।'' परोपकार को उसने बरक़रार रखा।

गुणदीप को जब मालूम हुआ कि उसके पिता की हालत में फिर से पर्याप्त सुधार हुआ है, तो इसका कारण उसकी समझ में नहीं आया। गुणदीप पिता मणिदीप से मिला। संपत्ति के विषय में अपनी माँग पेश की। मणिदीप को

पिछवाड़े के फलों के महत्व के बारे में बताना ही पड़ा। यह रहस्य जानते ही गुणदीप दौड़ा-दौड़ा पेड के पास गया। पेड में लगे असंख्य फलों को देखकर छाती पीटता हुआ पिता से कहने लगा, "आपने इस पेड़ का रहस्य मुझसे छिपाया! मुझसे पूछे बिना ही लिखित रूप में इन फलों को किसी के सुपुर्द कर दिया। यह घोर अन्याय है। अपना हिस्सा पाने के लिए मैं उच्च अधिकारी से इसकी शिकायत करूँगा।"

मणिदीप को यह पसंद नहीं था, इसलिए उसने जड़नाथ को ख़बर भेजी। पूरा विषय जानने के बाद जड़नाथ ने कहा, "गुणदीप के दावे में सच्चाई है। मैं एक उपाय सुझाता हूँ। इस पेड़ के फलों में से चार हज़ार फल मैं ले जाऊँगा। फलस्वरूप हर दिन आपको मुझे एक अशर्फ़ी के हिसाब से ग्यारह सालों तक देते रहना पड़ेगा। अतः जब तक आप जीवित रहेंगे तब तक हर दिन सोने की एक अशर्फ़ी देता रहूँगा। आज से इस पेड़ पर सर्वाधिकार गुणदीप के ही होंगे।" मणिदीप से उसने यों कहा।

गुणदीप को जड़नाथ का यह प्रस्ताव अच्छा लगा। इसके बाद गुणदीप ने उस पेड़ के फलों को बेचने की कोशिश की। पर वैद्यों ने साफ़-साफ़ बता दिया कि उन फलों में चिकित्सा के लिए आवश्यक गुण हैं ही नहीं तो गुणदीप निराश हो गया। वह जड़नाथ से मिला और बोला "जो दाम देना चाहते हो, चुका कर सारे फल तुम्हीं ले लो।"

जड़नाथ ने हँसकर कहा, "मैं उन बेकार फलों का क्या करूँगा?" "वे बेकार फल हैं? तुम्हीं ने तो हर फल के लिए सोने की एक-एक अशर्फ़ी का मूल्य तय किया।" गुणदीप ने आश्चर्य भरे स्वर में कहा। "तुम्हारे पिताजी से लेने पर ही वे फल मूल्यवान हैं। तुम्हारे पिछवाड़े का पेड़ ब्याज के सिक्कों का पेड़ है। जो उपकार तुम्हारे पिताजी ने किये, वह पूंजी है और उस पूंजी के लिए ये ब्याज के फल हैं।" जड़नाथ ने कहा।

उसकी इन मर्म भरी बातों को सुनकर गुणदीप का चेहरा फीका पड़ गया और सिर झुकाकर वह वहाँ से चला गया।

वेताल ने यह कहानी सुनाने के बाद कहा, "राजन्, जब से वैद्य विद्या पूरी करके लौटा तब से मणिदीप के परिवार के प्रति जड़नाथ का बर्ताव बड़ा ही विचित्र व निगूढ़ रहा है, जो स्पष्ट गोचर होता है। जड़नाथ से यह बात भी छिपी नहीं थी

कि उसका सहपाठी गुणदीप अपने माता-पिता से नाराज़ है, उनके प्रति उसमें आदर की भावना नहीं है। फिर भी उसने गुणदीप को सुधारने की कोई कोशिश नहीं की। चूंकि वैद्य वृत्ति के द्वारा उसने काफ़ी धन कमाया इसलिए मणिदीप के पिछवाड़े के पेड़ की आड़ में वह अपना मनोविनोद करता रहा। जिस धर्मात्मा के बल पर वह इतना बड़ा वैद्य बन पाया, उसके साथ न्याय नहीं किया। उसकी बेइज़्ज़ती की। क्या यह उसकी कृतघ्नता नहीं है? मेरे इन संदेहों के समाधान जानते हुए भी चुप रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।''

विक्रमार्क ने कहा, ''जड़नाथ के व्यवहार में न ही कोई विचित्रता है, न ही कोई निगूढ़ता। उसमें लोकज्ञान कूटकूटकर भरा हुआ है। वह अच्छी तरह से जानता है कि आर्थिक तथा मानसिक स्तरों में जहाँ भेद होते हैं, वहाँ उसे उन मानवों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए? उनकी विचार-पद्धति के अनुसार कैसे चलना चाहिए। निर्मल मन के माता-पिता चाहे वे अपनी संतान के अनादर व तिरस्कार के शिकार क्यों न हों, पर दूसरों के सामने वे अपनी संतान को नीचा नहीं दिखाते। इसी कारण मणिदीप ने जड़नाथ से कहा, ''हमारा बेटा गिडगिड़ा रहा है कि हम उसके साथ रहें, पर हम उसके साथ रहकर उसका बोझ बनना नहीं चाहते।'' ऐसी स्थिति में जड़नाथ करे भी तो क्या करे! अपनी कृतज्ञता जताने के लिए जड़नाथ ने पेड़ के फलों की आड़ में उनकी सहायता की। जब मणिदीप ने कहा कि जो भी दाम देना चाहते हो, दो और ये फल तुम्हीं ले लो, तब याद है, जड़नाथ ने क्या कहा? उसने कहा, ''तुम्हारे पिता से लेने पर ही इन फलों का मूल्य है, अन्यथा इनका कोई मूल्य नहीं।'' गुणदीप उसकी अर्थपूरित बातों से समझ गया कि वास्तविकता क्या है और उनके माता-पिता के परोपकार कितने मूल्यवान और महत्वपूर्ण हैं।''

राजा के मौन-भंग में सफल बेताल शव सहित ग़ायब हो गया और फिर से पेड़ पर जा बैठा।

(आधार - सुभद्रा देवी की रचना)

नक्काशी में भित्ति चित्र

केरल में त्रिचुर के निकट कालाडी के शंकर विश्वविद्यालय की १२०० फुट लंबी दीवार को नक्काशी में भित्ति चित्रकला से अलंकृत किया गया है। पाँच फुट ऊँचे भित्ति चित्र में दर्शित किया गया है कि एक गुरु अपने शिष्य को, सत्य, त्रेता, द्वापर और कलि के चारों युगों के एक ही अटूट कथाक्रम में ज्ञान का उपदेश दे रहे हैं। कुछ उदाहरण के तौर पर रामायण, महाभारत, शाकुन्तलम, मेघ संदेशम, रघुवंशम, भारत के १०८ कर्ण तथा आदि शंकर के चित्रण हैं। तीन वर्षों के कठिन श्रम के पश्चात सन् १९९८ में यह काम पूरा हुआ। गिनिज बुक ऑफ वर्ल्ड रेकार्ड्स में इसकी प्रविष्टि मिल गई है।

शाकाहारी गाँव

आजकल अधिक से अधिक लोग शाकाहारी बनते जा रहे हैं। उड़ीसा के एक गाँव में वहाँ के कुल पचास से ऊपर परिवारों में से एक भी परिवार माँस या मछली नहीं पकाता। वे केवल शाकाहारी भोजन खाते हैं। पूरबी उड़ीसा में ढेनकानल से ५० कि.मी. दूर बेंटासलिया ग्राम राज्य के किसी भी गाँव की तरह दिखाई पड़ सकता है, लेकिन यह उनसे अलग है। यहाँ के निवासी वैष्णव हैं और संत अच्युतानन्द के अनुयायी हैं। वे युगों से वैष्णव अनुष्ठानों को करते आ रहे हैं। इतना ही नहीं, वे शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं, वे दीर्घजीवी हैं और किसी राष्ट्रीय संकट या महामारी का वहाँ प्रकोप नहीं हुआ है। मनुष्य और पशु इस प्रकार बेंटासलिया में शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व के साथ जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

भारत की पौराणिक कथाएँ - १८

धारा के विरुद्ध जो तैरा
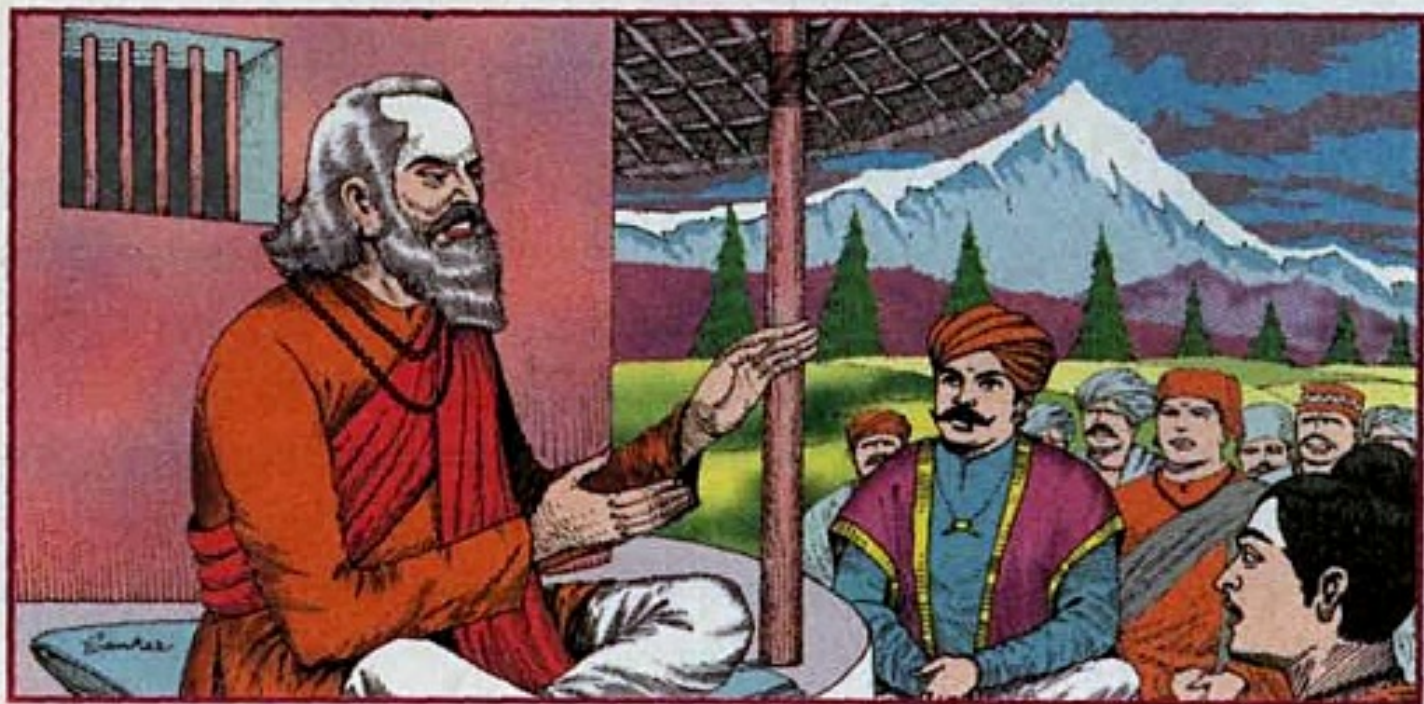
हिमालय के पदस्थल में बसा हरद्वार अति प्राचीन काल से तीर्थस्थल रहा है। यहाँ अनेक योगियों और गुरुओं के आश्रम थे।

समतल भूमि का एक धनी व्यापारी कभी-कभी इस पवित्र स्थान की यात्रा किया करता था। उसने एक आदरणीय वृद्ध पंडित को अपना गुरु स्वीकार किया था जो बहुत ज्ञानी माना जाता था। जब भी उसके व्यापार में घाटा होता था या उसके साझेदार के साथ कोई गलतफहमी हो जाती थी या जब कभी उसकी पत्नी या बेटे किसी बात पर असहमत हो जाते थे, तब मन में विरक्ति हो जाने पर वह हरद्वार आ जाता था। गुरु करुणा के साथ उसका स्वागत करता। व्यापारी को आश्रम में खास कर गुरु की उपस्थिति में बहुत शान्ति मिलती थी।

जब भी गुरु अपने शिष्यों से बात करता तो वह उनके पास बैठना बहुत पसन्द करता था। गुरु के प्रवचन सुनना उसे बहुत प्रिय था। निस्सन्देह इसका अर्थ यह नहीं था कि वह गुरु का हर शब्द समझ जाता था। बल्कि दुख की बात यह थी कि वह कई बातों पर, जिनके बारे में वह समझने का दावा करता था, गुरु से सहमत नहीं होता। उदाहरण के लिए जब भी वह गुरु के सामने अपनी व्यक्तिगत समस्या रखता, गुरु सिर्फ

यही कहता, "वत्स, यदि तुम मन की शांति चाहते हो तो भगवान को आत्म-समर्पण कर दो।" उसे यह समझ में नहीं आता था कि यदि, किसी साझेदार ने उसे धोखा दिया या काफी मात्रा में उसका माल रास्ते में चोरी हो गया तो इसमें भगवान कहाँ से आ टपके!

"गुरुदेव, यदि कोई धोखा दे तो क्या पुलिस या कोर्ट में नहीं जाना चाहिए? क्या भगवान हमें इन सांसारिक बातों में मदद करेंगे?" वह गुरु से अलग-अलग अवसरों पर अलग-अलग ढंग से प्रश्न किया करता। गुरु के उत्तर का भाव हमेशा वही होता था यद्यपि वे भिन्न-भिन्न शब्दों में होते। उनकी सलाह का सार यही होता था कि वह चाहे पुलिस या कोर्ट में जाये अथवा धोखा देनेवालों को सजा दिलाने में या चोरी का माल बरामद कराने में सफलता भी मिल जाये लेकिन उससे मन की शांति नहीं मिलेगी। किसी भी समय कोई और छोटी समस्या उसे परेशान करेगी। "ईमानदारी से व्यापार करने के लिए जो कुछ आवश्यक और स्वाभाविक हो उसे हर तरह से पूरा करो, लेकिन मन की शांति की कामना करते हो तो तुम्हें अपने आपको भगवान को समर्पित करना सीखना होगा। अंतिम लक्ष्य को प्राप्त करने में विफल भी हो जाते हो तब भी हर स्थिति में संतुष्ट रहोगे, यदि तुमने भगवान को समर्पित होना सीख लिया है, जो तुमसे बेहतर जानता है कि तुम्हारे लिए क्या अच्छा है और क्या बुरा है!" गुरु उसे अक्सर समझाते।

एक रात व्यापारी इस समस्या को लेकर बहुत देर तक गुरु के साथ तर्क-वितर्क करता रहा। गुरु कभी किसी के साथ धैर्य नहीं खोते थे, लेकिन जब वे महसूस करते कि वे एक सत्य को समझा नहीं पा रहे हैं तो चुपचाप हो जाते। उस रात को, जब आधी रात बीत गई और

व्यापारी उनकी बात को समझ नहीं पाया तो वे शांत हो गये। व्यापारी ने खेद व्यक्त करते हुए क्षमा माँगी कि उसने गुरु को रात में विलंब तक जगाये रखा।

अभी अंधेरा ही था और सूर्योदय में घंटे भर की देर थी कि तभी गुरु ने व्यापारी को उठाया और लगभग बिस्तर पर से खींचा। व्यापारी चकित था। फिर भी बिना कुछ कहे उसने गुरु का अनुगमन किया। पिछले कई दिनों से लगातार वर्षा हो रही थी और उस समय भी बूंदाबांदी चल रही थी। सब कुछ नीरव था। गुरु व्यापारी को गंगा के किनारे ले गये। नदी तेज प्रवाह के कारण भयानक लग रही थी।

गुरु क्या करना चाहते थे? व्यापारी चकित था।

''वहाँ देख मूर्ख,'' गुरु ने कहा और उंगली से एक विशाल हाथी की ओर संकेत किया जो नदी की बाढ़ की तेज धारा में बहा जा रहा था।

''और यहाँ देख,'' गुरु ने फिर एक छोटी मछली की ओर इशारा किया जो नदी तट के निकट अनायास ही धारा के विरुद्ध तैर रही थी।

''क्या कुछ समझ में आया? हाथी जैसा दृढ़ और मजबूत प्राणी भी परिस्थितियों के ज्वार से बच नहीं सकता और न चाहते हुए भी उसमें बह जाता है। लेकिन यह छोटा प्राणी अपनी इच्छा के मुताबिक, प्रचण्ड प्रवाह के विरुद्ध भी चलने-फिरने में समर्थ है, क्योंकि यह नदी में निवास करती है, यह नदी को समर्पित है। जब तुम भगवान को समर्पित हो जाते हो तब तुम उसी में निवास करते हो। वह कभी विचलित नहीं होता इसलिए तुम भी कभी विचलित नहीं होते। अच्छा, क्या तुम्हें अब कुछ प्रकाश मिला?'' गुरु ने उसकी पीठ पर थपकी देते हुए पूछा।

''हाँ गुरुदेव ! कृपया मेरी हठधर्मिता के लिए क्षमा कर दें,'' व्यापारी ने सच्चे हृदय से कहा।

समाचार झलक

अंतिम इच्छा पूरी हुई

दस वर्ष का बालक हुआंग जे कैंसर से पीड़ित था। एक दिन उसने पिता हुआंग जियाओयोंग से कहा कि वह चीन की राजधानी बिजिंग का प्रसिद्ध तियाननमेन स्क्वायर देखना चाहता है, जो उसके घर से २००० कि.मी. दूर था। लगभग ४४ वर्षीय उसका स्नेहिल पिता अपने बेटे की इच्छा पूरी करना चाहता था। उसके पास केवल एक साइकिल है जिस पर उसने धूप और वर्षा से बचने के लिए एक बरसाती के साथ-साथ दो के बैठने के लिए गद्दी बनवा ली और ७२ दिनों में साइकिल से उतनी दूरी तय कर ली। बालक इस बात से बहुत खुश था कि उसने मरने से पहले उस स्क्वायर को देख लिया है जहाँ अनेक ऐतिहासिक घटनाएँ घटित हो चुकी हैं।

यहूदियों का भारत को अलविदा

यहूदियों के अंतिम परिवार ने भारत को अलविदा कह दिया और वे अपनी पितृभूमि इजरायल चले गये। जोसेफ साइमन, पत्नी याहूदित और बच्चे सैम और सूसन केरल में पारावूर के ६०० वर्ष पुराने प्रार्थना भवन के सामने कुछ मिनटों के लिए खड़े हुए, फिर पीछे मुड़कर एक प्रतीक्षा करती हुई कार में बैठ गये। उन्हें विदाई देने के लिए यहूदी गली के निवासी वहाँ एकत्र थे जहाँ ५० वर्ष पहले तक केवल यहूदी परिवार रहते थे। जब सभी परिवार एक-एक करके चले गये तब जोसेफ और साइमन अलग-थलग पड़ गये। परंपरागत अनुष्ठानों और पर्वों पर सम्मिलित होने के लिए कोई न रहा। माता-पिता ने महसूस किया कि उसके दोनों बच्चों को भारत में कोई जीवन साथी नहीं मिलेगा। इसलिए आवश्यक था कि वे अपने समाज में लौट जायें। उनका प्रार्थना भवन अब सुरक्षित स्मारक घोषित कर दिया गया है।

उत्तरांचल की एक लोक कथा

भारत के नवीनतम राज्यों में से एक उत्तरांचल सन् २००० के सितम्बर महीने में उत्तर प्रदेश के १३ जिलों को मिलाकर बनाया गया। पहाड़ों का यह प्रदेश प्राकृतिक सौंदर्य और शांति का एक अनन्त प्रसार है। इस प्रदेश को देवभूमि कहा जाता है, क्योंकि यहाँ देवताओं का निवास है और केदारनाथ, बदरीनाथ, गंगोत्री तथा यमुनोत्री जैसे अनेक प्रसिद्ध तीर्थ स्थल हैं।

इस राज्य के पूरब में नेपाल है तथा उत्तर में चीन, पश्चिम में हरयाणा तथा उत्तर-पश्चिम में हिमाचल प्रदेश है। राज्य का अधिकांश भाग पर्वतीय है और लगभग केवल दस प्रतिशत समतल भूमि है। गंगा, यमुना, भागीरथी तथा अलकनन्दा जैसी अनेक नदियों का यह उद्‌गम स्थान है।

उत्तरांचल का क्षेत्रफल ५५ हजार ८४५ वर्गमील है तथा यहाँ की जनसंख्या ८४ लाख ७९ हजार ५६२ है। हिन्दी, गढ़वाली तथा कुमायूँनी यहाँ की मुख्य भाषाएँ हैं।

यह सब बिल्ली के कारण

पौड़ी की पहाड़ियों के नीचे एक छोटी-सी झोंपड़ी में एक वृद्ध दंपति रहता था। उसके नेगी नाम का एक बेटा था। वह तेज और चुस्त नहीं था। वह निष्कपट और भोला भाला था। उसकी निष्कपटता ने उसे सज्जन बना दिया था और अपनी छोटी-छोटी घनी जीवन्त आँखें तथा सौम्य शिष्टाचार के कारण काफी आकर्षक लगता था।

उसके घर के बगल से एक छोटी नदी बहती थी और प्राय: वह उसके पास बैठकर एक छोटी-

सी बांसुरी बजाता रहता था। निकट ही भेड़ें चरती रहती थीं और हिलसा मछली धूप में अपने चाँदी से चमकते मीनपक्षों के साथ दमकने लगती थी। पशु-पक्षी उसकी उपस्थिति के अभ्यस्त हो गये थे और चूंकि वह उन्हें भगाने की कोशिश नहीं करता इसलिए वे उससे डरते नहीं थे।

लेकिन वृद्ध माता-पिता उसके लिए चिंतित रहा करते थे। उन्हें महसूस होता था कि उनकी मृत्यु के पश्चात वह अपनी देखभाल नहीं कर पायेगा।

"हमारे नेगी का क्या होगा? उसकी देखभाल कौन करेगा?" मुर्गियों के दरबे से अंडे निकालते हुए वृद्धा ने अपने पति से कहा। उसका पति भेड़ों से दूध दूह रहा था। उसने उसकी बात सुन ली लेकिन चुप रहा। उसका चेहरा क़ठोर और झुर्रीदार था। उसकी नज़र बर्फीली चोटियों के पार आसमान की ओर थी। लेकिन कुछ देख नहीं रहा था। दूर से आती घाटी की मंद मंद हवा में नेगी की बांसुरी की मधुर आवाज सुनाई पड़ रही थी।

उस रात वृद्ध व्यक्ति सो न सका। वह बेचैनी में करवटें बदलता रहा। बिस्तर की चादर, लगता था मानों अजगर की तरह पैरों में लिपटकर जकड़ रही हो। वह सुबह जल्दी उठ गया और बेटे को उठाते हुए बोला, "नेगी, उठ जाओ, मैं तुमसे कुछ कहना चाहता हूँ।"

नेगी ने उठकर आँखें मलीं। यह भोर का समय था। पहाड़ियाँ धीरे-धीरे जीवन्त होने लगीं। मुर्गों की बाँग कभी-कभी सुबह की शांति को भंग कर रही थी। वृक्षों में सवेरे के पक्षी चहचहाने लगे थे।

नेगी पिता के पीछे-पीछे भेड़ों के बाड़े में गया। वृद्ध व्यक्ति एक ऊनदार पहाड़ी भेड़ और एक भूटीया (भेड़-कुत्ता) को लेकर बाहर आया। नेगी ने भेड़ को देखा। वह उसकी माँ की प्रिय भेड़ बुलबुल थी। बुलबुल की गरदन में एक छोटी सी घण्टी थी और वह काफी गोल-मटोल थी, क्योंकि उसकी माँ अपने हाथों से उसे बढ़िया से बढ़िया खाना खिलाती थी।

"बुलबुल को साथ ले जाओ और बाहर जाकर अपना भाग्य आजमाओ, मेरे पुत्र।" वृद्ध व्यक्ति ने कहा, "लेकिन एक शर्त है - भेड़ को न बेचना और न इसे मारकर इसका माँस बेचना। और जब वापस आओ तो कुछ पैसे साथ जरूर लाना।"

नेगी ने स्वीकार करते हुए सिर हिलाया। उसने माता-पिता के पाँव छूकर उनका आशीर्वाद लिया और वह भेड़ और कुत्ते के साथ घर से निकल पड़ा। वह छोटी पहाड़ी पर चढ़ा और उसने घाटी छोड़ दी।

बुलबुल रास्ते में पड़े रसदार डंठलों को टूंगती पीछे-पीछे चलती रही और भूटीया परभक्षियों को सावधानीपूर्वक देखता हुआ और बुलबुल पर आगे बढ़ने के लिए भौंकता रहा।

नेगी दिन भर पहाड़ी रास्ते पर चलता रहा। भूख लगने पर मार्ग में जंगली बदरी फल खा लेता और शीतल झरनों का जल पी लेता।

शाम तक वह पहाड़ को लगभग पार कर चुका था। सूरज अस्त हो रहा था। वह एक विशाल देवदार वृक्ष के नीचे बैठ गया और उसके धड़ के सहारे पीठ करके आराम करने लगा। उसने बुलबुल पर नजर डाली। वह उसके पास शांति से बैठकर जुगाली करने लगी। "मुझे आश्चर्य है कि पिता का यह कहने का तात्पर्य क्या था कि मैं तुम्हें न बेचूँ और न मांस के लिए मारूँ। फिर पैसे कैसे आयेंगे यदि दोनों में से कुछ न करूँ?" नेगी ने सोचा।

उसने भूटीया का सिर सहलाया। वह हांफ रहा था और कभी-कभी अपनी गुलाबी जीभ निकाल कर नेगी का हाथ चाटने लगता था। बुलबुल ने बा किया मानो कह रही हो कि मैं भी तुम्हारा हाथ चाटूँगी यदि मैं कर सकी।

नेगी बुलबुल और भूटीया के बीच घास पर लेट गया। वह रात की ठण्ढ से बचने के लिए आश्रय पाकर प्रसन्न था। दूसरे दिन चिड़ियों की चहचहाहट से जब उसकी नींद खुली तो उसने देखा कि भूटीया ने एक बिल्ली को डरा दिया है जिससे वह पेड़ पर जा दुबकी।

बिल्ली करुण स्वर में म्याऊँ म्याऊँ कर रही थी। और नीचे भूटीया की पूँछ उग्र होकर काँप रही थी और वह उत्तेजित होकर धीरे-धीरे गुर्रा रहा था। तभी नेगी ने कुछ आवाजें सुनीं और पेड़ों के पीछे से आती हुई तुरंत दो लड़कियाँ दिखाई पड़ीं। नेगी ने उन्हें आश्चर्य से देखा, लड़कियों को भी वहाँ नेगी को देखकर विस्मय हुआ। उन्हें बिलकुल आशा नहीं थी कि वहाँ पर किसी से भेंट होगी। इसलिए वे उत्सुकतावश वहाँ रुक गईं। अचानक छोटी लड़की ने पेड़ पर

दुबकी-बैठी बिल्ली को देख लिया और उसकी तरफ वह दौड़ कर गई।

नेगी झटपट उठा और भूटीया को दूर ले गया। तब तक लड़की बिल्ली के पास जाकर उसे उठाकर ले आई। बड़ी लड़की धीरे से भूटीया के पास जाकर उसका झोलदार सिर सहलाने लगी। "हम लोगों को उम्मीद नहीं थी कि यहाँ पर कोई होगा। क्या तुम यहाँ पर अकेले हो?" उसने पूछा।

"नहीं, मेरे साथ बुलबुल, मेरी भेड़ और भूटीया हैं।" नेगी ने उत्तर दिया।

नेगी तब तक दोनों लड़कियों को देखता रहा। दोनों बहुत सुंदर थीं और उसे बड़ी लड़की देखते ही पसंद आ गई। जब वह मुस्कुराने लगी तो उसके दोनों गालों पर दो गड्ढे बन गये। "मेरा नाम शमा है," उसने कहा, "और यह मेरी छोटी बहन नीरजा है।" छोटी बहन की ओर संकेत करती हुई वह बोली।

नेगी सोचने लगा, "इन दो खूबसूरत लड़कियों के नाम कितने सार्थक हैं। शमा ज्योति को कहते हैं और नीरजा कमलिनी को।"

नेगी उन लड़कियों के साथ उनके घर आया। उसने लड़कियों से एक बरतन लेकर बुलबुल का दूध निकाला, फिर तीनों ने बैठकर आलू पराठा और भेड़ के दूध का नाश्ता किया।

कुछ समय गुजर गया। नेगी जानता था वह हमेशा के लिए वहाँ नहीं रह सकता। उसे चिंता थी कि कैसे वह कुछ धन अर्जित करे। वह उदास हो गया। उसकी उदासी उसके चेहरे पर स्पष्ट प्रकट हो रही थी। शमा ने पूछा, "तुम उदास क्यों हो गये नेगी?" नेगी तुरंत फूट पड़ा। उसने अपने पिता की शर्त और अपनी समस्या के बारे में सबकुछ शमा को बता दिया।

कॉरबेट नेशनल पार्क

भारत का पहला नेशनल पार्क, कॉरबेट नेशनल पार्क ५२० वर्गमीलके क्षेत्र में फैला हुआ है। इसकी स्थापना सन् १९३५ में तत्कालीन संयुक्त राज्य के राज्यपाल के नाम पर हेली नेशनल पार्क के रूप में हुई थी। बाद में सन् १९५७ में इसका नाम बदल कर विख्यात प्रकृति-वैज्ञानिक-शिकारी-लेखक जिम कॉरबेट के नाम पर जिम कॉरबेट नेशनल पार्क रख दिया गया।

पार्क पौड़ी गढ़वाल और नैनीताल-दो जिलों के क्षेत्र में रामगंगा नदी के किनारे फैला हुआ है। पार्क में एक कृत्रिम झील है जो नदी को बाँध कर बनाया गया है। इस पार्क का जंगल सूखा अस्थायी है और यहाँ जैव विविधता प्रचुर मात्रा में पाई जाती है। बाघ, हाथी, काकड़ तथा सांभर जैसे सुरक्षित वन्य जीवन के अतिरिक्त यहाँ पौधों की ११० किस्में, और पक्षियों की ६०० उपजातियाँ पाई जाती हैं। वास्तव में प्रथम बाघ संरक्षण कार्यक्रम का आरम्भ सन् १९७३ में इसी पार्क से किया गया था।

शमा ने धैर्य के साथ उसकी बात सुनी। नेगी के अपनी कहानी कह लेने के बाद वह ठठाकर हँसी। फिर वह बुलबुल के सिर को प्यार से सहलाया और कहा, ''क्यों, यह तो बड़ा आसान है! क्यों नहीं इसके ऊनी बाल को कटवाकर किसी ऊन-व्यापारी को बेच देते? वे इसे स्वेटर अथवा ऊनी कालीन बनाने में प्रयोग करेंगे।''

नेगी को यह उत्तर बहुत अच्छा लगा। पिता की शर्त को पूरा करने का कितना अच्छा उपाय है!

''धन्यवाद शमा,'' वह खुशी से उछल पड़ा, ''यह उपाय मुझे कभी नहीं सूझा!''

उसी दिन नेगी बुलबुल को लेकर निकट के गाँव में गया और बुलबुल के बाल कतरवा दिये। फिर उन्हें थैले में भरकर ऊन व्यापारी के पास गया। बुलबुल के बाल मुलायम थे और सावधानीपूर्वक संवारे हुए थे। उनमें कोई जटा नहीं थी जिसे फेंका जा सके। ऊन व्यापारी जानता था कि मुलायम बाल स्वेटर के लिए अच्छा होता है। इसलिए उसने खुशी से नेगी को ऊन का बहुत अच्छा दाम दिया।

दूसरे दिन नेगी बुलबुल और भूटीया के साथ पहाड़ पार कर घर लौट गया। उसने माता-पिता से गले मिल कर उन्हें ऊन की बिक्री के पैसे खोलकर पकड़ा दिये। वे लोग यह जानकर बहुत प्रसन्न हुए कि उनका बेटा इतनी जल्दी पैसे कमा कर लौट आया।

''क्या समस्या का समाधान तुमने खुद सोचा या किसी ने सहायता की?'' पिता ने पूछा।

नेगी ने सच-सच बता दिया, ''पिता, एक तरुण लड़की ने मेरी सहायता की। उसका नाम शमा है। वे पहाड़ी पर रहते हैं। वृद्ध दम्पति ने चुपचाप एक अर्थपूर्ण दृष्टि से एक दूसरे को देखा।

''यह लड़की शमा बुद्धिमती लगती है। वह हमारे नेगी के लिए एक दम सही रहेगी,'' उसकी माँ बोली, ''वह हम लोगों के गुजर जाने के बाद इसकी देखभाल कर लेगी।''

इसलिए अगले दिन उसका पिता उसी रास्ते से गया जिस रास्ते से नेगी गया था और नेगी के विवाह की बात पक्की कर आया। नेगी और शमा की शादी हो गई और उसके बाद वे सुखपूर्वक रहने लगे। आज भी लोग प्रायः अपने बच्चों को उनकी कहानी सुनाकर कहते हैं कि कैसे एक बिल्ली, एक कुत्ते और एक भेड़ के कारण उन दोनों की मुलाकात हो गई।

- सुमंगल द्वारा पुनर्कथित

एक ही घर का भिखारी

पावन अव्वल दर्जे का कंजूस था। पीढ़ी दर पीढ़ी तक आराम से बैठकर खाने के लिए आवश्यक संपत्ति उसके पास भरी पड़ी थी। पर चुप बैठने से कहीं संपत्ति घट न जाए, इसलिए वह चुप बैठने का नाम नहीं लेता था। खर्च ज्यादा न हो, इसलिए खाता भी बहुत कम था।

हालांकि वह कंजूस था, पर उसका दिमाग पैना था। जो भी काम वह करता था, खूब सोचने-विचारने के बाद ही करता था। पहले उसने सोच रखा था कि शादी नहीं करूँगा, क्योंकि शादी करने से पत्नी का पालन-पोषण करना पड़ेगा और उसमें बहुत धन खर्च होगा। उसने घर का काम-काज करने के लिए नौकरानी को भी रख लिया, पर वह ठीक तरह से काम नहीं करती थी। हर महीने उसे वेतन देते समय पावन को बहुत दुख होता था। अब वह सोचने लगा कि शादी कर लूँ तो पत्नी को वेतन देने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। जीवन भर घर में पड़ी रहेगी और घर का काम-काज करती रहेगी। आख़िर उसने शादी करने का निश्चय कर लिया।

लोग भली-भांति जानते थे कि पावन अव्वल दर्जे का कंजूस है, फिर भी कई लड़कियों के माँ-बाप उसे अपनी बेटी देने के लिए तैयार थे, क्योंकि उसके पास अपार संपत्ति थी। वे अधिकाधिक दहेज देने के लिए भी तैयार थे। पावन ने इस पर खूब सोचा। उसे लगा कि गरीब लड़की से शादी रचाने में ही भलाई है। अमीर लड़की से शादी करने से अनेक कष्टों का सामना करना पड़ेगा। शादी भी बड़े पैमाने पर करनी होगी। अमीर लड़की तो ठाठ-बाट से रहना चाहेगी, नौकर-नौकरानियों को रखेगी और अपना राज चलायेगी। इतना सब कुछ सोचने के बाद उसने

- सुरेश तलवाडी -

एक ग़रीब परिवार की लड़की से शादी कर ली।

पावन की पत्नी पवित्रा बड़ी ही सुंदर थी। उसने आशाएँ बांध रखी थीं कि पति उसे रेशमी साड़ियाँ पहनने को देगा, गला आभूषणों से लबालब भरा रहेगा और नौकर-नौकरानियाँ उसकी सेवा करने केलिए सदा तैयार रहेंगी, पर शादी के बाद ऐसा कुछ भी नहीं हुआ।

पवित्रा के गले में माँ-बाप का दिया हुआ एक हार था। उसे भी पावन ने उसके गले से हटवा दिया और कहा, ''शरीर पर पड़े रहने से सोना घिस जाता है। केवल विवाह आदि शुभ अवसरों पर जाते समय इसे पहन लिया करो।''

पावन ने उसके लिए जो साड़ियाँ खरीदी थीं, वे भी सस्ती और गाढ़ी थीं। अपने घर में भी पवित्रा ने ऐसी साड़ियाँ नहीं पहनी थीं।

पर हाँ, एक बात है। पावन हमेशा अपनी पत्नी की तारीफ़ करता रहता था। कहता था, तुम जो भी पहनो, सुंदर लगती हो। बिना गहनों के तुम सहज सुंदरी लगती हो।

स्वभावतया पवित्रा नम्र स्वभाव की थी। इसलिए पति के प्रशंसा-भरे शब्द उसे बहुत भाते थे। परंतु भोजन के विषय में वह कोई समझौता करने के लिए तैयार नहीं थी।

पावन खाने पर ज्यादा खर्च करने के पक्ष में नहीं था। पर उसे इस बात का भी डर था कि अच्छा भोजन न किया जाए तो स्वास्थ्य के ख़राब हो जाने का डर है। इसलिए उसने वैद्यों की सलाह लेकर आरोग्यकर आहार से संबंधित विषय जाने। उसने सस्ती जिन्सों की एक सूची बना ली। फिर वह ज्वार, धनिया आदि पत्तों की तरकारियों से हर रोज़ एक नयी रसोई बनाने लगा। धन के पीछे पागल पावन को यह भोजन स्वादिष्ट लगता था, पर पवित्रा से यह खाना खाया नहीं जाता था।

पवित्रा सोचती रहती थी कि ऐसी स्थिति में कोई देवी-देवता पति में परिवर्तन लाने के लिए उसकी सहायता करने आ जाएँ तो कितना अच्छा होगा। रात में सपने में उसे कोई देवी दिखायी पड़ने लगी। पर जागते ही उसे कुछ भी याद नहीं रहता था।

एक दिन पावन बाहर से लौटते ही खाना परोसने के लिए जल्दबाजी कर रहा था। उस समय पवित्रा उस सपने को याद करने में लगी

हुई थी, जिसे उसने पिछली रात देखा था। पवित्रा ने पति के लिए भोजन परोसा। पावन ने अपने साथ उसे भी खाने के लिए मजबूर किया। तब उसे तुरंत रात का सपना याद आ गया।

उसने पति से कहा, ''कल रात को सपने में मुझे पार्वती देवी के दर्शन हुए। उन्होंने कहा कि आज हम किसी भिखारी को अन्नदान करेंगे तो सब प्रकार से हमारा भला होगा। हमारी आमदनी भी अधिक बढ़ेगी। अन्नदान से दुगुना खर्च न हो, इसलिए मैंने उपवास रखने का निश्चय किया। मेरा भोजन किसी भिखारी को दे दीजिए।''

पावन ने पत्नी की अक़्लमंदी की तारीफ़ की और खाना खाते ही पत्नी का हिस्सा दान में देने के लिए किसी भिखारी को ढूँढने निकला। थोड़ी दूर जाने के बाद उसने झाड़ियों के पीछे से कराहने की आवाज़ सुनी। जाकर देखा तो वहाँ पाया, एक ही घर के भिखारी को।

इस एक ही घर के भिखारी को लेकर गाँव में बड़ी-बड़ी विचित्र बातें कही जाती थीं। वह दिन में एक ही बार खाता था। वह भी एक ही घर के सामने खड़े होकर भीख माँगता था। कोई धन देना चाहे तो किसी भी हालत में वह स्वीकार नहीं करता, इसलिए जिस घर के सामने खड़े होकर वह भीख माँगता था, उस घरवाले उसे पेट भर स्वादिष्ट खाना खिलाते थे। बहुत-से लोगों का विश्वास था कि जिस घर का खाना वह खाता है, उस घरवालों का भला होता है। चूँकि वह एक ही घर का खाना खाता था, इसलिए उसका नाम पड़ा, एक ही घर का भिखारी।

किसी को भी यह मालूम नहीं होता कि किस दिन वह किस घर को चुनेगा। परंतु आज तक उसने एक बार भी पावन के घर के सामने खड़े होकर भीख नहीं माँगी।

उस दिन उस भिखारी के कंधे से दुपट्टा हवा में उड़ गया तो उसे लाने में वह गिरते-गिरते बचा। पर उसके पैर में मोच आ गयी। उसके लिए उठना भी मुश्किल हो रहा था। ऐसी हालत में तभी पावन वहाँ आ गया।

पावन को देखते ही भिखारी ने दीन स्वर में कहा, ''साहब, बहुत भूखा हूँ। आपके पास खाने के लिए कुछ हो तो दीजिए। खा लेने के बाद

लकड़ी के सहारे खड़ा हो जाऊँगा और चला जाऊँगा।''

पावन भी किसी भिखारी की तलाश में ही था। इसलिए उसकी बातों से वह बहुत खुश हुआ। उसे इस बात पर प्रसन्नता हो रही थी कि उसकी पत्नी का सपना साकार होनेवाला है। उसने वह भोजन भिखारी को दे दिया।

भिखारी ने बड़ी ही आतुरता से एक क़ौर मुँह में रखा, उसे खूब चबाया और कहा, ''साहब, कहते हैं कि भूख कोई स्वाद नहीं जानती। मेरे पेट में चूहे दौड़ रहे हैं, पर यह कौर जहर सा लग रहा है। यह भोजन कैसे बनाया साहब?''

पावन ने जैसे ही उसकी तैयारी का विवरण दिया, भिखारी ने कहा, ''मनुष्य नये-नये पकवान को अच्छे से अच्छे स्वाद के लिए ढूँढ़ निकालता है। आपने किस उद्देश्य से इस पकवान को ढूँढ़ निकाला?''

''इस रसोई से तबीयत ठीक रहती है, और इस पर खर्च भी कम होता है।'' पावन ने कहा।

''बाप रे, एक भिखारी होते हुए भी मैंने ऐसा खाना कभी नहीं खाया। आप ऐसा खाना हर रोज़ कैसे खा पाते हैं?'' भिखारी ने पूछा।

''क्या करें। मेरे भाग्य में यही बदा है।'' पावन ने लंबी सांस खींचते हुए कहा।

परोसे गये आहार को फेंकना नहीं चाहिए, यह भिखारी का उसूल था। उसने बड़ी मुश्किल से पावन का लाया खाना खाया। फिर पावन की सहायता से उठ खड़ा हुआ और लंगड़ाता हुआ धीरे-धीरे वहाँ से चलता बना।

दूसरे दिन, पवित्रा ने पावन को स्वादिष्ट खाना बनाकर खिलाया। पावन घबराता हुआ बोला, ''इस खाने को पकाने के लिए आवश्यक सामग्री

तुम्हें कहाँ से मिली? कहीं तुम्हारे मायकेवालों ने तो नहीं भेजा?''

''ऐसी कोई बात नहीं। एक ही घर का भिखारी ले आया। मैं मना करती रही पर वह इन्हें रखकर चला गया। मुझे लगा कि यह सब कुछ मेरे सपने की महिमा होगी। इसलिए इन्हीं से रसोई बनायी।'' पवित्रा ने कहा।

पावन ने भी सुन रखा था कि जो घरवाले भिखारी को खिलाते है, उनका शुभ होगा। इस सत्य की पुष्टि के लिए उसने गली में जाकर और लोगों से इसके बारे में पूछताछ की। तब एक आदमी ने कहा, ''वह तो अब एक ही घर का भिखारी नहीं रहा। अब वह अनेक घरों में भीख माँगने लगा है। पैसे देने पर लेने भी लगा है।''

भिखारी में आये इस आकस्मिक परिवर्तन के बारे में जानने की उत्कंठा पावन में जगी। वह भिखारी की खोज में निकल पड़ा। उसे वह गाँव के बाहर के एक इमली के पेड़ के नीचे बैठा मिला। पावन के संदेह को सुनकर उसने कहा, ''साहब, जब भूखा था, आपने खाना खिलाकर मेरी सहायता की। इसके लिए मैं आपका ऋणी हूँ। परंतु, जो खाना आप खा रहे हैं, उसे देखते हुए मुझे आप पर बड़ी दया आयी। आपके लिए मैंने कितने ही घरों में जाकर पैसों की भीख माँगी और जिन्सें खरीदीं और आपकी पत्नी के सुपुर्द किया। मेरी इच्छा है कि आप हर दिन स्वादिष्ट भोजन खाते रहें।

भिखारी की बातें सुनकर पावन का सिर शर्म से झुक गया। उसे लगा, मानों उसका सर ही कट गया हो। वह सोच में पड़ गया। बस, एक बार खाना खिलाने पर भिखारी भी प्रतिफल देना चाहता है। उसने पैसों की जो भीख माँगी, वह दाता को ही दान में देना चाहता है। अब रही उसकी अपनी बात! घर में धन-राशि पड़ी हुई है, पर क्या लाभ! क्या कभी उसने अड़ोस-पड़ोसवालों की सहायता की?

उस दिन से पावन बदल गया। अब एक ही घर का भिखारी फिर से एक ही घर के भिखारी में परिवर्तित हो गया और अब वह पावन के घर के सामने भी खड़े होकर भीख माँगने लगा।
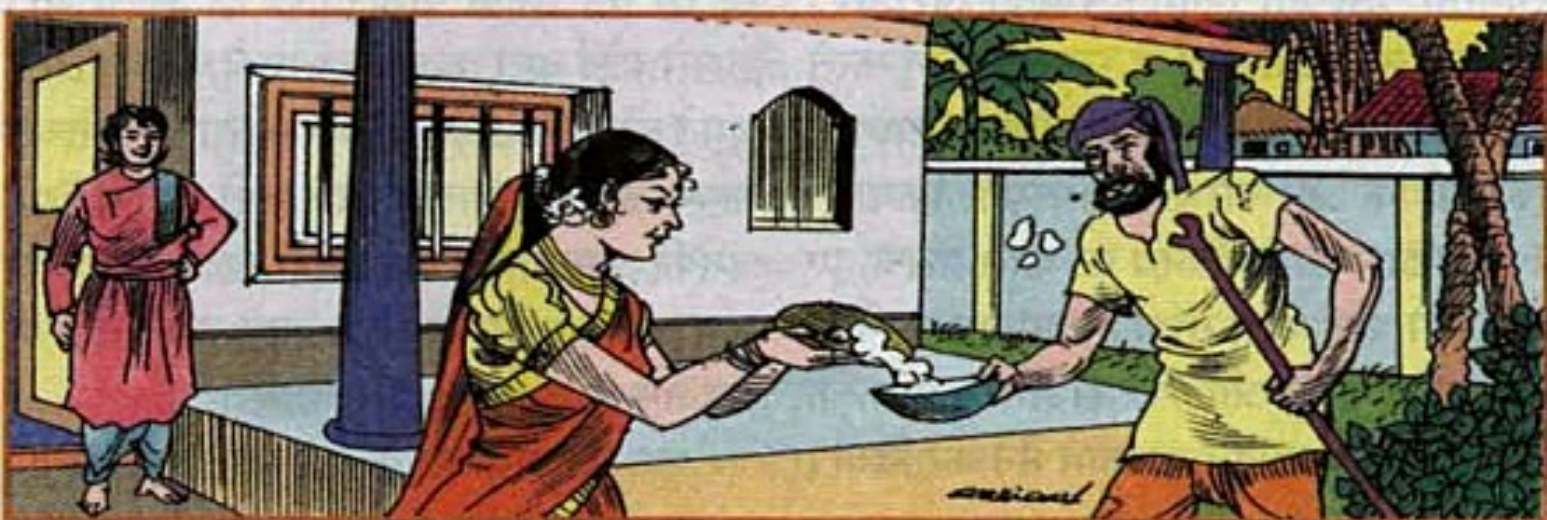
नमस्कार नारंग

नारंग को ज़मींदार के दीवान में नौकर का काम मिला। यह दशरथ की सहायता से संभव हो पाया। उसने नारंग को समझाया, "तुम अच्छे स्वभाव के हो, पर दूसरों का आदर करना नहीं जानते। जब-जब जमींदार तुम्हें दिखायी पड़ें, तुरंत उन्हें नमस्कार करना। किसी भी हालत में यह मत भूलना।"

नारंग ने अच्छी तरह से यह बात याद रखी। पहले दिन जैसे ही उसने ज़मींदार को देखा, सविनय नमस्कार किया। वे बहुत खुश हुए। वहाँ जो लोग उपस्थित थे, उनसे गुफ़्तगू करते हुए फिर से उन्होंने नारंग को देखा। नारंग ने फिर से एक और बार उन्हें नमस्कार किया।

ज़मींदार उसके विनय पर बहुत प्रसन्न हुए और उसे कोई काम सौंपा। काम पूरा करने के बाद नारंग लौटा और फिर से नमस्कार करके कहा कि आपका बताया काम मैंने कर दिया।

यों, जमींदार जब-जब दिखायी पड़ते थे, वह बिना चूके अवश्य नमस्कार करता था। उसकी यह आदत-सी हो गयी। जमींदार किसी से बातें कर रहे हों और बीच में वे नारंग की ओर मुड़ें तो वह तुरंत फिर से नमस्कार करता था।

जमींदार उसके विनय से बहुत प्रभावित हुए और उसे अपना अंगरक्षक बना लिया। तब से वह हमेशा यदि जमींदार आगे-आगे जा रहे हों तो वह उनके पीछे-पीछे ही आता था। उससे कोई बात कहने के लिए वे उसकी तरफ़ घूमते तो नारंग उन्हें नमस्कार करता था। सोचते समय जमींदार इधर-उधर टहलते रहते थे। यह उनकी आदत थी। नारंग वहीं खड़ा रहता था। जब जमींदार उसकी तरफ़ आने लगते तो फिर वह नमस्कार करता था।

एक बार ज़मींदार के गले में दर्द होने लगा।

- गोकुल -

गले के दर्द को दूर करने के लिए वैद्य के कहे अनुसार वे अपने गले को बायीं और दायीं तरफ़ घुमाने लगे। उनकी दायीं तरफ़ ही खड़े होकर, जब-जब जमींदार दायीं तरफ अपना सिर घुमाते थे, तब-तब नारंग नमस्कार करने लगा। नारंग के नमस्कारों के बारे में दीवान में सबको मालूम हो गया।

एक दिन जमींदार शहर के पास के खेतों की ओर जाने लगे। नारंग भी उनके पीछे-पीछे जाने लगा। थोड़ी दूर जाने के बाद एक चोर अचानक नारंग से टकराया, जिस वजह से वह नीचे गिर गया। चोर आगे बढ़ा और ज़मींदार के गले की सोने की जंजीर छीन ली। घबराकर उन्होंने मुड़कर देखा तो नारंग ज़मीन पर गिरा पड़ा था। नारंग ने फिर उन्हें नमस्कार किया।

जमींदार ने देखा कि नारंग उठने की स्थिति में नहीं है तो "चोर, चोर" कहते हुए वे चोर का पीछा करने लगे। उनकी चिल्लाहट सुनते ही नारंग उठ खड़ा हुआ और दौड़ता हुआ चोर को पकड़ने के लिए दोनों हाथ बढ़ाये। पर, चोर बचकर भागने लगा। नारंग चोर को पकड़ सकता था, पर वह ऐसा नहीं कर पाया, क्योंकि चोर की तरफ़ बढ़ते हुए जमींदार को उसने देखा तो अनायास ही दोनों हाथ उठाकर जमींदार को नमस्कार किया। मौका देखकर चोर रफूचक्कर हो गया।

जमींदार बहुत नाराज़ हुए। हाथ में आये चोर को छोड़ दिया। इसपर उन्होंने नारंग को

दुत्कारा। नारंग ने हाथ जोड़कर कहा, "सरकार, आपको नमस्कार किये बिना मैं नहीं रह सकता। इसी वजह से चोर बचकर निकल गया। आप ही बताइये, मेरा नमस्कार करना ग़लत था? आदत भुलाने की कोशिश करूँगा।"

"तुम्हारे नमस्कार की वजह से मैं सोने की जंजीर खो बैठा," जमींदार ने क्रोध-भरे स्वर में कहा। नारंग ने कहा, "मैंने चोर का चेहरा देख लिया। वह हमारे ही शहर का है। उसका नाम नहीं जानता। फिर देखूँगा तो अवश्य पहचान लूँगा। इसलिए आप मुनादी पिटवा दीजिए कि नारंग ने चोर को पहचान लिया है, वह चुपचाप जंजीर को लौटा दे तो बात आगे बढ़ायी नहीं जायेगी, नहीं तो

असली चोर को पकड़ लेंगे और उसे कड़ी सज़ा दी जायेगी।

जमींदार ने नारंग के कहे अनुसार मुनादी पिटवा दी। दूसरे ही दिन जमींदार की सोने की जंजीर उनके पलंग पर पायी गयी।

जमींदार ने नारंग की सलाह की प्रशंसा करते हुए कहा, "मेरी जंजीर मुझे मिल गयी पर यह स्पष्ट है कि हमारे आस्थान के किसी आदमी से उसका परिचय है। किसी भी प्रकार से हो, उसे पहचानो और मुझे सूचित करो।"

एक क्षण तक सकपकाने के बाद नारंग ने कहा, "मालिक, मैंने सचमुच चोर का चेहरा नहीं देखा। इस बात पर मुझे दुख हुआ कि मेरी वजह से आपकी जंजीर की चोरी हो गयी और मुझे लगा कि भविष्य में नमस्कार करने की अनुमति आप मुझे नहीं देंगे। खूब सोचा और इस उपाय को अमल में लाने का निर्णय लिया। मुझे मालूम है कि मैं चोर को पहचान नहीं सकूँगा पर चोर को यह कैसे मालूम होगा कि मैं उसे पहचान नहीं सकूँगा। वह डर गया होगा, इसीलिए उसने जंजीर लौटा दी।"

"तुम्हारे हाथ नमस्कार करना ही केवल नहीं जानते बल्कि तुम्हारा दिमाग़ भी बड़ा पैना है। तुमने जब चोर को ठीक तरह से नहीं देखा, तब तुमने यह बात मुझसे क्यों छिपायी?" जमींदार ने पूछा।

"सरकार, आप मुझसे बहुत अप्रसन्न थे, उसपर मैं अगर कहूँ कि मैंने चोर को नहीं देखा, तो आप और क्रोधित हो उठते। अलावा इसके मेरे यह कहने पर ही आपने मुनादी पिटवायी कि मैंने चोर का चेहरा देखा। अगर ऐसा नहीं करता तो आपको मेरे उपाय पर विश्वास ही नहीं होता।" नारंग ने कहा।

जमींदार ने उसकी अक़्लमंदी की तारीफ़ करते हुए कहा, "अब मैं तुमसे बहुत खुश हूँ। तुम पाकशाला में जाओ और रसोइये से बताओ कि मैंने दो प्रकार की मिठाइयाँ बनाने को कहा है।"

नारंग ने रसोइये से यह बात बतायी और उसने 'हाँ' कह दिया। फिर कहा, "गुलाब जामुन और जलेबियाँ बना चुका हूँ। कहो, कैसे हैं?" कहते हुए उसने एक जलेबी दी।

नारंग ने खाया और चकित रह गया, क्योंकि

आज तक उसने ऐसी स्वादिष्ठ जलेबी कभी नहीं खायी थी। एक और खाना चाहा, पर संकोचवश चुप रह गया। परंतु उसके लौटने के कुछ ही क्षणों के बाद जमींदार ने उसे फिर से पाकशाला में भेजा। रसोइये ने फिर से उसे एक जलेबी खाने को दी।

पता नहीं, जमींदार को उस दिन क्या हुआ, नारंग को लगातार पाकशाला भेजते ही रहे। जब-जब वह वहाँ गया, रसोइया उसे जलेबी खिलाता ही रहा। दस-बारह जलेबियों को खाते ही नारंग को उनसे चिढ़ हो गयी। उसने और जलेबियाँ खाने से इनकार कर दिया।

''इनकार मत करो। यह जमींदार का हुक्म है।'' रसोइये ने कहा।

''लगातार मैं जलेबियाँ ही खाता जा रहा हूँ। कोई और स्वादिष्ठ पकवान हो तो खिलाना।'' नारंग ने रसोइये से कहा।

''जमींदार ने हुक्म दिया है कि मैं तुम्हें केवल जलेबियाँ ही खाने को दूँ। कोई दूसरा पकवान खाना हो तो उनकी अनुमति लेकर आओ।'' रसोइये ने कहा। नारंग ने यह बात जमींदार से बतायी।

जमींदार ने कहा, ''जलेबियाँ तो तुम्हें पसंद हैं न?'' नारंग ने कहा, ''हाँ, पसंद हैं। पर एक ही दिन में इतने खा लूँ तो क्या उनसे मन उचट नहीं जायेगा?''

उसके जवाब पर जमींदार ने मुस्कुराते हुए कहा, ''सुनो, तुम भी मेरे मन को प्रसन्न करने के लिए नमस्कार पर नमस्कार किये जा रहे हो। मुझे यह पसंद है। तुम्हारे पेट को खुश करने के लिए मैंने जलेबियों की व्यवस्था की, क्योंकि वे तुम्हें पसंद हैं। मन को या मनुष्य को हद से बढ़कर सदा किया जानेवाला कोई भी काम पसंद नहीं आता। उससे चिढ़ हो जाती है। मेरी बात समझ गये न?''

अब पूरी बात नारंग की समझ में आ गयी। उस दिन से वह जमींदार को एक या दो बार ही नमस्कार करने लगा और सीमा को लांघता नहीं था। पर जमींदार उसे नमस्कार नारंग कहते हुए थकते नहीं थे।

अपने भारत को जानो

१. यह भारत का एक राज्य है। मुद्रण के समय उत्तर-दक्षिण दिशा का ध्यान नहीं रखा गया। राज्य का नाम क्या है तथा इसकी राजधानी कहाँ है?

२. वर्तमान समय में भारत का सबसे बड़ा राज्य कौन-सा है?

a) उत्तर प्रदेश b) मध्य प्रदेश
c) राजस्थान d) आन्ध्र प्रदेश

३. जब भारत की राजधानी कोलकाता से दिल्ली बदली गई तब भारत का वाइसराय कौन था?

a) लॉर्ड कर्ज़न b) लॉर्ड हार्डिंग
c) लॉर्ड वावेल d) लॉर्ड डलहौजी

४. चिपको आन्दोलन का आरंभ किसने किया?

a) मेनका गाँधी
b) अरुन्धती राय
c) मेधा पटकर
d) सुन्दरलाल बहुगुना

५. हैदराबाद राजधानी बनने से पहले आंध्र प्रदेश की राजधानी कहाँ थी?

a) नेल्लोर
b) कर्नूल
c) विजयवाड़ा
d) विसाखापतनम

६. जलियाँवाला हत्याकाण्ड ने रवीन्द्रनाथ टैगोर को ब्रिटिश सरकार द्वारा उन्हें दी गई नाइटहूड की उपाधि लौटा देने के लिए प्रेरित किया। यह त्रासदी कब घटित हुई?

a) १९१९ b) १९२२
c) १९२४ d) १९२७

(उत्तर अगले महीने)

सितम्बर प्रश्नोत्तरी के उत्तर

१. सी - i, ए - ii, बी - iii
२. वकील
३. कार्टूनिस्ट शंकर
४. यू.एस.एस.आर.
५. ४९ वर्ष
६. सूचना एवं प्रसारण मंत्री
७. बैंकों का राष्ट्रीयकरण
८. १९८०

विघ्नेश्वर

नानी एक दिन फल-वृक्षों से भरे मार्ग से होकर जा रही थी, तब एक सुंदर बालक पेड़ पर बैठा गा रहा था। नानी के मन में उस बालक को छेड़कर उसके साथ बातचीत करने की इच्छा हुई। वह बोली, "बेटा, एक फल फेंक दो। मेरे मुँह में पानी भरा आ रहा है।"

बालक ने मुस्कुराते हुए पूछा, "नानीजी, तुम्हें कैसा फल चाहिए? इस पेड़ में तरह-तरह के फल लदे हैं। बुढ़ापे को दूर करनेवाला फल दूँ? या मृत्यु पर विजय पानेवाला फल? या धनवाला फल दूँ?"

नानी समझ गई कि वह बालक सुब्रह्मण्येश्वर है। वह प्रणाम करके बोली, "सुब्रह्मण्येश्वर, मुझे ऐसा ज्ञान फल दीजिए जो लोगों में बाँटे जाने पर भी न घटे और ज्ञान की संपत्ति देते जायें।"

इस पर सुब्रह्मण्य स्वामी निज रूप में मयूर पर प्रत्यक्ष हुए। नानी के सिर पर अपनी तलवार की नोक का स्पर्श करा कर सुब्रह्मण्येश्वर ने उस पर अनुग्रह किया। नानी को अचानक विश्वस्वरूप ओंकार तत्व, ब्रह्म ज्ञान, तथा जीवन्मुक्ति के मार्ग का बोध हुआ। सुब्रह्मण्येश्वर नानी को आशीर्वाद देकर अंतर्धान हो गये।

नानी ने पैदल चलकर घर-घर और गाँव-गाँव में ज्ञान, भक्ति और जीवन के उत्तम धर्मों का प्रचार किया। नानी के मुँह से निकले मधुर बचन गीत जैसे बनकर जन साधारण में फैल गये। देशाटन करते नानी संध्या के समय तक जंगल के मार्ग पर पहुँची। आसमान में घने बादल छा गये। चारों तरफ़ अंधेरा छा गया। बिजली कौंधने लगी। बूंदा-बूंदी शुरू हो गई। नानी पत्थर

का ठोकर खाकर नीचे गिर पड़ी और उसके हाथ की लाठी दूर जा गिरी।

उस अंधेरे में किसी के पैरों की मधुर आहट सुनाई दी। नानी ने सर उठाकर देखा। उसी समय बिजली चमक उठी। उस रोशनी में एक अत्यंत लाड़ला, तोंदवाला नाटा बालक दिखाई दिया। उस बालक ने नानी को अपने हाथों का सहारा देकर ऊपर उठाया और लाठी लाकर उसके हाथ में दे दी। बालक ने पूछा, ''नानीजी, तुम कहाँ जा रही हो? किस तीर्थ का सेवन करना चाहती हो।''

''बेटा, मेरे लिए यह सारा विश्व एक दिव्य क्षेत्र है। लेकिन मुझे जिस क्षेत्र पर पहुँचना है, उसका रास्ता दीख नहीं रहा है। तुमने तो अपना परिचय नहीं दिया, छोटे बालक हो, इस अंधेरी रात में क्यों चले आये हो?'' नानी ने पूछा।

''नानीजी, मैं तुम्हारे बचपन का दोस्त हूँ। तुम जन्म से ही मुझे जानती हो। अंधेरे में मुझे पहचान नहीं पाई हो। बताओ कि तुम किस क्षेत्र में जाना चाहती हो?'' बालक ने कहा।

''तुम्हें बताने से फ़ायदा ही क्या? वह तो शिव सानिध्य का महाक्षेत्र है।'' नानी बोली।

''बस, यह मेरे लिए कौन-सा बड़ा काम है? चलो, मैं तुम्हारा हाथ पकड़कर ले जाऊँगा।'' यों कहकर बालक ने नानी का हाथ पकड़कर एक क़दम आगे बढ़ाया। इतने में बिजली कौंध गई। उस रोशनी में नानी ने देखा कि उसके हाथ को अपनी सूंड में थामकर विघ्नेश्वर नानीको चला रहे हैं। इस पर वह आँखें मूंदकर बोली, ''हे देव, बचपन में भी मुझे तुम्हीं चलाते थे।''

बहुत दूर जाने पर विघ्नेश्वर बोले, ''नानीजी, हम शिवजी के सान्निध्य तक पहुँच गये हैं।'' ये बातें सुन नानी ने आँखें खोलकर देखा।

नानी को वहाँ पर सिवाय रोशनी के कुछ दिखाई नहीं दिया। नीचे नज़र डालने पर उसे कई नक्षत्रों के मण्डल दिखाई दिये। इनके अलावा अनेक सूर्य कुटुंब, धूम केतु, प्रकाश-चक्रों के समान तेज गति से घूमनेवाले तेज-मण्डलों से भरा अनन्त विश्व उसके पैरों के नीचे अत्यंत शोभायमान दिखाई दिया।

इस पर विघ्नेश्वर नानी का हाथ छोड़कर बोले, ''नानीजी, तुम शिवजी के सान्निध्य में पहुँच गई हो। यहाँ काल नहीं होता, नाश-भी नहीं है; यही सृष्टि, स्थिति और लय से अतीत

शिवजी का सान्निध्य, सच्चा कैलास है ! विश्वनाथ और विश्वेश्वर बने शिवजी के दर्शन कर लो।'' यों कहकर विघ्नेश्वर अंतर्धान हो गये।

नानी को प्रकृति में ऊपर-नीचे तक समान रूप से व्याप्त एक बड़ी ज्योति दिखाई दी। उस ज्योति के भीतर प्रमथ गणों के द्वारा उच्चारित किया जानेवाला स्तोत्र ओंकार ध्वनि के रूप में सुनाई दे रहा था। विश्वेश्वर शिवजी उसे दिखाई दिये। उनके दोनों तरफ़ विघ्नेश्वर, पार्वती, कुमारस्वामी, नंदी इत्यादि थे।

नानी को शिवजी का साक्षात्कार हुआ। शिवजी ने उस पर अनुग्रह किया।

पावन मिश्र ने भांप लिया कि मण्डप के चित्रों में ईख अपने हाथ में लिये हुए विघ्नेश्वर का एक भव्य चित्र है जिसकी ओर एक किसान एकटक ताक रहा है। इस पर मिश्र जी ने उस चित्र की कहानी शुरू की-एक ज़मींदार हर साल विनायक की अर्चनाएँ कराता और उनके उत्सव मनाता था। इसलिए वह गणेशभक्त शिरोमणि कहलाया। ज़मींदार के यहाँ सैकड़ों एकड़ ज़मीन में गन्ने का एक बहुत बड़ा बगीचा भी था।

गन्ने के बगीचे की देखभाल करते हुए हर साल भारी मात्रा में गन्ना पैदा करनेवाला उसका एक नौकर था जो गणेशजी का परम भक्त था। वह सदा गणेशजी का स्मरण करते अपने मन में यही निवेदन किया करता था-''हे गणेश्वर, इस बार ईख की फसल ज़्यादा से ज़्यादा पैदा करने का अनुग्रह कीजिए।'' नौकर के साथ उसकी पत्नी और दस साल का लड़का भी कड़ी मेहनत करते, फिर भी ज़मींदार उन्हें पर्याप्त मेहनताना नहीं देता था। जो मजूरी देता, वह भी वक़्त पर नहीं देता था। नौकर भोला था, इस कारण कभी वह कोई शिकायत नहीं करता था।

पर ज़मींदार की पत्नी साधु स्वभाव की औरत थी। वह जहाँ भी अन्याय देखती, अपने मन में गणेशजी से निवेदन करती थी। अपने पति के द्वारा नौकर को थोड़ी सी मजूरी देते देख उसे सलाह देती-''सही मजूरी आप नहीं दे रहे हैं। मेहनत देखकर उसके मुताबिक़ मजूरी क्यों नहीं देते?''

''वाह, तुम्हारी सलाह का पालन करें तो हमें बचेगा ही क्या? आख़िर तुमसे किसने सलाह माँगी?'' ज़मींदार अपनी पत्नी को डाँट देता। इस पर जमींदार की पत्नी अपने मन में सोचती-''मेहनत करनेवालों का पेट काटकर ये उत्सव

नौकर का लड़का गणेशजी का परम भक्त था। विनायक चतुर्थी के दिन वह बगीचों व तालाबों से सफ़ेद कुमुद, लाल कमल, तरह-तरह के फूल-पत्ते लाकर घर-घर में पहुँचा देता था।

एक बार विनायक चौथ आ पड़ी। लड़के की उम्र के बढ़ने के साथ उसकी बुद्धि का भी विकास हो रहा था। उस दिन उस लड़के के पिता गन्ने के बण्डलों को जमींदार के गोदामों में लाकर भर रहा था। उसने अपने बाप के पास जाकर पूछा, ''बाबूजी, हम भी गणेशजी को नैवेद्य चढ़ायेंगे। क्या मैं एक गन्ना ले जाऊँ?''

नौकर ने बण्डल में से एक गन्ना निकाल कर अपने बेटे के हाथ थमा दिया। उसी वक़्त जमींदार घर से बाहर निकला। जमींदार के क्रोध का पारा चढ़ गया। उसने गरज कर पूछा, ''अरे बदमाश, क्या तुम सारा गन्ना अपने घर पहुँचा रहे हो?'' यों डाँटकर उस पर कोड़े बरसाने लगा। उस दृश्य को गाँव भर के लोगों ने देखा। मगर किसी ने भी नौकर को बचाने की कोशिश नहीं की।

नौकर कोड़े की मार को सहन नहीं कर पाया, और हिम्मत करके बोला-''सरकार, आज विनायक चतुर्थी है, इसलिए भगवान को नैवेद्य चढ़ाने के लिए मैंने सिर्फ़ एक ही गन्ना अपने लड़के को दिया है।''

''क्या बोला? तुम जैसे नीच जातिवाले पूजा और अर्चना भी करते हो?'' जमींदार ने कड़क कर पूछा।

और पूजा-अर्चनाएँ करवाने से फ़ायदा ही क्या है? भगवान, आप इनको सद्बुद्धि दीजिए।''

उस साल एक हज़ार गन्नोंवाले बण्डल गाड़ियों में भर कर ज़मींदार के गोदामों में पहुँचाये गये। उस फसल को देख ज़मींदार बोला-''यह सब गणेशजी की कृपा का फल है। आख़िर हम गणेशजी की पूजा-अर्चनाएँ किसलिए कर रहे हैं? क्या ये व्यर्थ जायेंगे?''

''तो क्या हमारे नौकर की मेहनत की कोई क़ीमत नहीं है?'' ज़मींदार की पत्नी ने पूछा।

''ओह, तुम्हारी मेहरबानी की भी कोई हद है? अगर इस तरह मजदूरों का हम समर्थन करेंगे तो हमें भी झोला बांधकर उनके पीछे चलना पड़ेगा। इन मजदूरों की क्या हस्ती है? यह सब भगवान गणेशजी की कृपा है!'' जमींदार ने झट जवाब दिया।

"हुजूर हम नीच जाति के हुए तो क्या हुआ? क्या हमारे अंदर भगवान के प्रति भक्ति नहीं होती?" नौकर ने पूछा।

जमींदार उसका मजाक़ उड़ाते हुए बोला- "अरे, तुम्हारा चेहरा देखने से पता चलता है न? जाओ, घर से गन्ना उठा लाओ।" नौकर से रहा नहीं गया। उसने उल्टा सवाल पूछा- "सरकार, आख़िर एक गन्ने के वास्ते आप यों तड़प रहे हैं? इससे आपका बनता-बिगड़ता क्या है? हम तो गाड़ियाँ लादकर आपके गोदाम भर रहे हैं। एक गन्ने से आप कौन-सा महल खड़ा कर लेंगे?"

नौकर की बातें सुन जमींदार भड़क उठा और गरज कर बोला- "जानते हो, एक नहीं, दस नहीं, एक हजार गन्ने भी मेरे लिए एक तिनके के समान हैं। सुनो, सबेरा होने से पहले तुम्हें एक हज़ार गन्ने चबाना होगा। गन्नों को चूसने के बाद उनकी सीठी का ढेर मुझे दिखाना होगा। वरना तुम्हें एक गन्ने के पीछे एक हज़ार कोड़े लगवाये जायेंगे।" यों डाँटकर अपने सेवकों के द्वारा उसके हाथ बंधवा दिये,इसकेबाद उसे एक गोदाम में ढकेल कर उसके आगे एक हज़ार गन्नों वाला बंडल डलवा दिया।

जमींदार बड़ा सनकी था। उसके मन में जब

जो बात आती, वह उसी वक़्त आगे-पीछे सोचे बिना कर बैठता। उसने गोदाम के चारों तरफ़ अपने भटों को पहरे पर बिठा दिया।

लेकिन जमींदार की पत्नी से यह अन्याय देखा न गया। उसने मनमें गणेशजी की यों प्रार्थना की, ''विघ्नेश्वर, हमारा नौकर बेचारा भोला-भाला है। अगर वह गन्ना खाने बैठ जाएगा तो नाहक़ मर जायेगा। यदि नहीं खायेगा तो मेरे पति के हाथों मार खाकर मर जाएगा। आप ही उसको बचाने की कृपा कीजिए।''

नौकर के दिमाग में कुछ नहीं सूझा। वह लाचार होकर विघ्नेश्वर का स्मरण करते संध्या होते ही सो गया।

सबेरा होते ही जमींदार ने जाकर गोदाम में झांक कर देखा। उसे नौकर के सामने हिमालय पर्वत जैसे गन्ने की सीठी का सफ़ेद ढेर दिखाई दिया। जमींदार आश्यर्च से भौचक रह गया।

जमींदार की चिल्लाहट सुनकर उसकी पत्नी वहाँ पर दौड़कर आ पहुँची। जमींदार ने उससे कहा-''हमारा सर्वनाश हो गया! गोदाम में एक भी गन्ना नहीं बचा। सब कुछ सीठी हो गया। हमारा नौकर आदमी नहीं, भूत है। चलो, यह हम लोगों को भी खा जाएगा।'' इस पर जमींदार की पत्नी ने उसे समझाया-''हमारा नौकर न कोई भूत है और न उसने ये गन्ने खाये हैं। मैंने अपनी आँखों से खुद देखा है। सबेरा होने के पहले ही एक हाथी का चिंघाड़ सुनकर मैं जाग उठी। मैंने खिड़की में से देखा। एक बहुत बड़ा हाथी गन्ना चबाते दिखाई दिया और थोड़ी ही देर में गायब हो गया।''

''यह तुम क्या बकती हो? मैंने आस-पास कहीं किसी हाथी को नहीं देखा।'' जमींदार यों अपनी पत्नी को डाँट ही रहा था, तभी कुछ लोग गणेशजी के उत्सव देख लौटते हुए दौड़ आये और बोले-''हमने मण्डप में गणेशजी की जो मूर्ति रखी थी, वह पिछली रात से दिखाई नहीं दे रही है। हमने सभी जगह उसको ढूँढ़ा। फिर गोदाम के भीतर झांक कर बोले-''लीजिए, वह मूर्ति तो यहाँ है!'' यों कहते हुए वे लोग उसी ओर दौड़ पड़े।

सत्य और स्वराज के लिए डटे रहना

क्लास गुलगपाड़ा और शोरगुल का अखाड़ा बना हुआ था। जब अध्यापक कक्षा में आया तब उसने देखा कि फर्श पर मूंगफली के छिलके बिखरे पड़े हैं। उसने क्रोधित होकर कहा, ''जिसने जिसने मूंगफली खाई है वे सब आकर गन्दगी को साफ करें।''

एक बालक को छोड़कर सभी छात्र सफाई के काम में झटपट जुट गये। ''क्या मैं तुझे सबका साथ देने के लिए विशेष निमंत्रण दूँ?'' अध्यापक ने डाँटा। बालक उठा और बोला, ''मैंने मूंगफली नहीं खाई, इसलिए छिलके नहीं उठाऊँगा।''

लेकिन सब छात्र एक साथ चिल्ला पड़े, ''यह सच नहीं है, सर। उसने भी हम लोगों के साथ मूंगफली खाई है।'' जब अध्यापक ने देखा कि बालक इनकार करने पर अड़ा हुआ है तो उसने पूछा, ''क्या तुम यह कहना चाहते हो कि सारा क्लास झूठ बोल रहा है और केवल तुम ही सच बोल रहे हो?'' यह कहकर अध्यापक ने बेंत की छड़ी उठाई और उसकी तलहथी पर पिटाई की। बालक ने सजा को स्वीकार कर लिया और अपनी किताबें उठाकर वह चुपचाप घर चला गया। सभी छात्र उसे आश्चर्य से देखते रहे।

बाद में अध्यापक ने उसके घर जाकर उसके पिता को सारी कहानी बताई। अध्यापक ने सोचा कि वे बालक को डाँटे-फटकारेंगे। परन्तु इसके बदले उन्होंने अध्यापक की ओर देखकर कहा, ''जब इसने कहा कि इसने मूंगफली नहीं खाई है - तब वह झूठ नहीं बोल रहा था। मेरा बेटा झूठ कभी नहीं बोलता।''

अध्यापक अपने कानों पर विश्वास न कर सका और पिता तथा पुत्र को टकटकी लगाकर देखता ही रह गया।

बालक के इस दृढ़ चरित्र ने ही अंगरेजों के विरुद्ध खड़े होने की और यह घोषणा करने की शक्ति दी कि ''स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और इसे हम लेकर रहेंगे।'' वही बालक बाद में बाल गंगाधर तिलक के रूप में प्रसिद्ध हुआ।

CHANDAMAMA INDIA LTD. OCT-03 LIBRARY

सफ़ेद दाढ़ीवाला काला साधु

राजाराम चिंतामणि नामक गाँव का निवासी था। उसका पिता रघुवीर गाँव के धनी भूपति का नौकर था। रघुवीर अपने बेटे राजाराम को बहुत चाहता था। उसके बचपन में ही उसकी माँ गुज़र गयी, इसलिए उसी ने उसे बड़े प्यार से पाला-पोसा। राजाराम खूब पढ़ना-लिखना चाहता था। रघुवीर भी चाहता था कि उसका बेटा शिक्षित बने।

पर, भूपति की धर्मपत्नी भानुमति को यह क़तई पसंद नहीं था, क्योंकि उसे डर था कि अगर राजाराम शिक्षित हो जायेगा तो रघुवीर की मौत के बाद वह उसके घर में नौकरी नहीं करेगा। उसने एक दिन रघुवीर को समझाते हुए कहा, "तुम्हारा बेटा दस साल का हो गया। अब वह घर के काम कर सकता है। आगे से तुम हमारे आम के बगीचे का काम संभालो। बगीचे में जो झोंपड़ी है, उसी में तुम दोनों रहो।"

"राजाराम को खूब पढ़ाने की मेरी बड़ी इच्छा है मालकिन," रघुवीर ने हाथ मलते हुए कहा।

यह सुनते ही भानुमति ने ऊँचे स्वर में कहा, "कैसी बेकार उम्मीद लिये बैठे हो। पढ़ाई कहीं खाना देती है, कपड़े देती है? याद रखो, अपने पचीसवें साल तक तुम्हारा बेटा यदि नौकरी करेगा, और उसके लिए उसे जो रक़म मिलनी चाहिए, वह मेरे पास जमा रहेगी। मैं वह पूरी रक़म उस समय उसे दूँगी। फिर वह रक़म ब्याज पर देकर हाथ पर हाथ धरे आराम से ज़िन्दगी काट सकता है। पागल मत बनो। उसकी पढ़ाई-

- वरप्रसाद -

लिखाई के बारे में सोचना छोड़ दो।'' उसने ज़ोर देते हुए उसे सावधान किया।

इस स्थिति में रघुवीर भला कर भी क्या सकता था। उसने अपने बेटे को भूपति के घर में नौकरी पर लगा दिया और वह बग़ीचे की झोंपड़ी में रहकर बगीचे का काम संभालने लगा।

कुछ साल गुज़र गये। किसी बीमारी की वजह से अकस्मात् रघुवीर मर गया। इसके दूसरे ही साल भानुमति ने राजाराम की शादी करा दी। उसकी पत्नी चंपा को अपने घर की नौकरानी बना लिया और राजाराम को बगीचे का काम सौंप दिया।

छः साल और गुज़र गये। राजाराम का बेटा रघुराम अब छः साल का था। वह बड़ा ही अक्लमंद और फुर्तीला बालक था। गाँव की पाठशाला में पढ़ता था और सब परीक्षाओं में अव्वल आता था। उसकी अक़्लमंदी को देखते हुए राजाराम ने एक दिन पत्नी से कहा, ''मैं तो पढ़ नहीं पाया। कम से कम अपने बेटे को खूब पढ़ाना ताकि मेरी तरह उसे नौकरी करनी न पड़े।''

परंतु चंपा ने निराशा-भरे स्वर में कहा, ''तुम्हारी सोच सही है। पर इसके लिए हमारे पास इतना धन भी तो नहीं है। जितनी आमदनी है, उतना खर्च भी है। एक पाई भी हम बचा नहीं पा रहे हैं। फिर बेटे को कैसे पढ़ा पायेंगे?''

राजाराम ने थोड़ी देर तक सोचने के बाद कहा, ''यजमान भूपति के घर की पूरी देखभाल भानुमति मालकिन ही करती हैं। सब अधिकार उन्हीं की मुट्ठी में है। अपने दसवें साल से उनके घर में नौकरी की। उन्होंने वचन दिया था कि जब मैं पचीस साल का हो जाऊँगा तब उस मियाद तक जो रक़म मुझे मिलनी चाहिए, वह एक साथ देंगी। अब तक वह रक़म लगभग दस हज़ार हो गई होगी। उस रक़म से मैं शहर में कोई व्यापार करूँगा। वहीं हम बस जाएँ तो रघुराम की उच्च शिक्षा की भी व्यवस्था कर सकेंगे।''

चंपा को पति के विचार बिलकुल सही लगे।

राजाराम अपना निर्णय सुनाने के लिए भूपति के घर गया। जब उसने भानुमति को अपना निर्णय सुनाया तब भूपति भी वहाँ मौजूद था। सब सुनने के बाद भानुमति बोली, ''तुम्हारे पिता की भी ऐसी ही नाहक़ उम्मीद थी। बिल्ली के पेट से बिल्ली ही का जन्म होता है, नौकर के पेट से

दुख हुआ। उसने चंपा से कड़ुवे स्वर में पूछा, ''तुम्हारा पति कहाँ है? तुम अब तक काम पर क्यों नहीं आयी?''

चंपा ने दीन स्वर में कहा, ''मालकिन, कल रात को एक विचित्र घटना घटी। आँधी के दौरान किसी ने हमारा दरवाज़ा खटखटाया। मेरे पति ने दरवाज़ा खोला तो सामने देखा, एक सफ़ेद दाढ़ीवाले काले साधु को। वह साधु बिलकुल भीग चुका था।

''पेट में चूहे दौड़ रहे हैं। खाने के लिए कुछ दोगे? थोड़ा चावल और छाछ हो तो काफ़ी है। उसी से काम चला लूँगा।'' काँपते हुए स्वर में उस साधु ने पूछा।

''मालकिन, वह साधु महिमावान लगता है। जस्ते की थाली में थोड़ा-सा अन्न था। उसने वह खा लिया और छाछ पी लिया। फिर, कुछ कहे बिना उस मूसलधार बारिश में ही कहीं चला गया। फिर हमने देखा वह थाली और लोटा लाल्टेन की कांति में चमक रहे हैं। हमने निश्चय कर लिया कि साधु के छूने के कारण ही ये सोने के बरतनों में बदल गये। तड़के ही मेरा पति शहर चला गया। कहता था, उन्हें बेचकर वहीं व्यापार करूँगा।'' रघुराम को प्यार से और निकट लेते हुए चंपा ने कहा।

अपने नौकरों के इस भाग्य पर भानुमति ईर्ष्या से जल उठी। बिना कुछ कहे, चंपा को एक बार तीखी नज़रों से देखती हुई, पति के साथ वापस चली गयी।

नौकर ही जन्म लेता है। अब रही रक़म की बात। जहाँ तक मैं जानती हूँ, तुम्हारी एक पाई भी हमारे पास नहीं है। तुम्हारे पिता ने बहुत पहले ही वह रक़म ले ली।''

भूपति को अच्छी तरह मालूम था कि उसकी पत्नी झूठ बोल रही है, फिर भी डर के मारे वह मुँह सीकर चुप बैठा रह गया।

राजाराम भी कुछ बात किये बिना चुपचाप घर लौट आया। उस रात को बड़ी आँधी आयी। भूपति और भानुमति रात भर अपने आम के बग़ीचे को लेकर बहुत चिंतित थे।

सबेरे-सबेरे दोनों घोड़ा-गाड़ी में बग़ीचे में आये। तब रघुराम को पास में बिठाये चंपा मात्र वहाँ मौजूद थी। आम बग़ीचे भर में तितर-बितर पड़े हुए थे। भानुमति को यह दृश्य देखकर बहुत

उस दिन भी सूर्यास्त के बाद हवा चलने लगी और बारिश भी होने लगी। रात का समय था। भूपति घोड़े बेचकर सो रहा था। भानुमति खिडकियाँ बंद करने उठी। बिजली की चकाचौंध में उसने देखा, सफ़ेद दाढ़ीवाले काले साधु को। उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ।

उसने तुरंत मुखद्वार खोला और साधु से कहा, ''अंदर आइये स्वामीजी। बारिश में आप भीग रहे हैं।''

अंदर आते ही साधु ने कहा, ''बड़ी भूख लगी है। खाने को कुछ मिलेगा?'' उसके स्वर में अस्पष्टता थी।

भानुमति ने उसे तुरंत नये कपड़े दिये और उसे एक गोल मेज़ के सामने बिठाया। फिर रसोई-घर में जाकर वह एक थाली में खाना और लोटे में पानी ले आयी।

खा चुकने के बाद साधु ने कहा, ''अन्नपूर्णा की तरह अच्छा खाना खिलाकर मुझे भूख से बचा लिया।'' फिर वह बाहर देखने लगा। भानुमति ने कहा, ''इस भारी वर्षा में आप कैसे जा सकेंगे? इस लोहे की बड़ी पेटी पर पैर फैलाकर विश्राम कीजिए। सबेरे चले जाइयेगा।'' लग रहा था, मानों वह गिड़गिड़ा रही हो।

साधु मुस्कुराता हुआ लोहे की बनी बड़ी पेटी पर लेट गया। भानुमति खुश होती हुई अपने शयनागार में चली गयी।

देरी से सोने की वजह से भानुमति कोई सात बजे ही जाग पायी। जैसे ही वह पलंग से उठी, वह सीधे उस कमरे में गयी, जहाँ कल रात को साधु लोहे की बनी बड़ी पेटी पर लेटा था। पर वहाँ साधु नहीं था। उसने सोचा कि शायद पूरी पेटी सोने में बदल गयी होगी, इसलिए उसके पास आकर ध्यान से देखा। पेटी में कोई परिवर्तन नहीं हुआ, जैसी थी, वैसी ही थी। पर वह पूरी तरह से खुली हुई थी। यह देखते ही भानुमति ज़ोर से चिल्ला पड़ी।

फिर पेटी को ग़ौर से देखती हुई बड़बड़ाने लगी, "एक चोर साधु को महिमावान साधु समझ बैठी। घर के अंदर बुलाकर पेट भर खाना खिलाया। वह तो पेटी के अंदर जितने भी गहने थे, जितनी भी सोने की अशर्फ़ियाँ थीं, चुराकर ले गया। मेरा पूरा सोना ले गया।" वह अपने आप को संभाल नहीं सकी। उसके हाथ-पाँव काँपने लगे। एक और बार ज़ोर से चिल्लाती हुई वह ज़मीन पर गिर पड़ी।

भानुमति की चिल्लाहट सुनकर भूपति वहाँ आया। उस समय भानुमति "धन, चोर साधु" कहती हुई बड़बड़ा रही थी। उसने तुरंत पेटी में झांककर देखा। उसमें आभूषण और अन्य मूल्यवान वस्तुएँ यथास्थान पर थीं। पर उस रक़म की थैली वहाँ नहीं थी, जिसमें राजाराम को पचीस सालों के बाद लौटाने का वचन देकर वह धन का संचय करती आ रही थी।

यह जानते ही, भूपति ताड़ गया कि वह साधु कौन है, जो यहाँ आया। इसका यह मतलब हुआ कि राजाराम सिर्फ़ वही थैली ले गया, जिसमें उसकी रक़म रखी हुई थी। नौकर की ईमानदारी पर उसे आश्चर्य हुआ और साथ ही आनंद थी।

उसने बड़े प्यार से भानुमति के कंधे को थपथपाते हुए कहा, "हमारा धन बिलकुल सुरक्षित है। डरो मत।"

परंतु भानुमति उठकर बैठने की स्थिति में नहीं थी। अब भी वह बड़बड़ा रही थी। भूपति ने तुरंत वैद्य को बुलवाया। वैद्य ने भानुमति की तरह-तरह से परीक्षा की और अपना निर्णय सुनाते हुए कहा, "ये अकस्मात् किसी मनोव्यथा की शिकार हुई हैं। छः, सात महीनों तक इनपर कोई मानसिक दबाव न हो, इसका ख्याल रखिये। मैं भी आवश्यक चिकित्सा करता रहूँगा।"

छे महीनों के बाद भी भानुमति की मानसिक भ्रांति दूर नहीं हुई। "मेरा सोना गया, पूरा सोना चला गया," यह कहकर अब भी वह बड़बड़ाती रहती थी। इस दुर्घटना के बाद भूपति ने खूब सोचा-विचारा, गाँव के प्रमुखों से सलाह ली और अपने धन से गाँव के ग़रीब विद्यार्थियों के लिए निःशुल्क पाठशाला की व्यवस्था की।

तीन कौड़ी का पुण्य

एक गाँव में प्रभुगुप्त नामक एक व्यापारी था। वह धन पर अपनी जान देता था। उसकी पत्नी मीनाक्षी को अपने पति की यह कंजूसी बिलकुल अच्छी नहीं लगती थी। लेकिन पुण्य कार्य के लिए हठ करके पति के हाथों से ख़र्च अवश्य करवाती थी।

प्रभुगुप्त के पास भोगने के लिए धन का अभाव न था, पर संतान की कमी उसे खटकती थी। संतान पाने के वास्ते मीनाक्षी ने अनेक देवी-देवताओं की पूजा की, मगर इससे कोई फ़ायदा न हुआ।

आख़िर मीनाक्षी ने थक कर यह मनौती की कि यदि उसे संतान होगी तो वह भगवान को अपने शरीर पर के सारे गहने दे देगी और साथ ही उसके पति को एक वर्ष के व्यापार में जो नफ़ा होगा, उसका सौवाँ हिस्सा हुंडी में डाल देगी।

इस मनौती के कुछ ही दिन बाद मीनाक्षी गर्भवती हो गयी और समय पर उसने एक बच्चे को जन्म दिया। इसके बाद मीनाक्षी ने मनौती की यह बात अपने पति से बताई।

प्रभुगुप्त मनौती की बात सुनते ही चौंक पड़ा और बोला, ''तुम्हारा दिमाग ख़राब तो नहीं हो गया? बदन पर के सारे गहनों का मूल्य कम से कम दो-तीन हज़ार होगा। फ़ायदे में एक पैसे के हिस्सा का मतलब भी समझती हो! फिर कभी तुम यह बात मेरे सामने न उठाना।''

मीनाक्षी अपने पति की धमकी सुन क्रुद्ध हो बोली, ''इस बात में तुम ना नहीं कह सकते। यह मामला भगवान के साथ जुड़ा हुआ है। अगर बच्चे की कोई हानि हुई तो मेरी लाश देखोगे! ख़बरदार!'' प्रभुगुप्त ने लाचार होकर अपनी पत्नी की बात मान ली।

इसके कुछ दिन बाद प्रभुगुप्त अपनी पत्नी और बच्चे को लेकर भगवान की मनौती चुकाने चल पड़ा। मीनाक्षी ने मनौती के सारे गहने पहन लिये। प्रभुगुप्त ने यह निर्णय किया कि

- दिलीप चोपड़ा -

फ़ायदे में सौवाँ हिस्सा एक हज़ार रुपये बैठता है।

"हिसाब-क़िताब के मामले में भगवान को धोखा मत दो !" मीनाक्षी ने अपने पति को सावधान किया। तब राह-खर्च के निमित्त एक और हज़ार लेकर प्रभुगुप्त चल पड़ा। प्रभुगुप्त चलते वक़्त दरवाजे पर जब ताला लगा रहा था, तब उसे बरामदे के चबूतरे पर आसन जमाया हुआ एक बैरागी दिखाई दिया।

बैरागी ने प्रभुगुप्त से कहा, "बाबू, पुण्यतीर्थों पर जाते समय दान-धर्म करके चलना चाहिए। रात से मैं कुछ खाया-पिया नहीं हूँ, कुछ तो मुझे दो।"

"अबे, तुम अपने उपदेश को रहने दो। तुम्हारे क़मबख़्त तीन कौड़ी का पुण्य मुझे नहीं चाहिए। मैं हज़ारों रुपये दान करके भगवान से बहुत सारा पुण्य कमाने जा रहा हूँ।" प्रभुगुप्त ने जवाब दिया।

प्रभुगुप्त की बातें सुन उसकी पत्नी खीझ उठी। उसने अपने पति की आँख बचाकर थैली में से दो लड्डू निकालकर बैरागी की झोली में डाल दिया और अपनी कमर में से तीन कौड़ी छुट्टे पैसे निकालकर उसे दे दिया।

मीनाक्षी को बैरागी को पैसे देते प्रभुगुप्त ने देख लिया। वह मीनाक्षी को डाँटते हुए बोला, "अरी, तुम सारा धन यहीं खर्च कर दोगी तो लौटती बार भीख माँगोगी क्या?"

पुण्यतीर्थ पर पहुँचते ही मंदिर में जाते वक़्त प्रभुगुप्त ने मीनाक्षी के हाथ एक हज़ार रुपये देकर समझाया-"मेरे पास एक हज़ार रुपये और हैं। एक हज़ार रुपये हम हुंडी में डाल देंगे, बाक़ी एक हज़ार हम अपने राह-खर्च के लिए रख लेंगे।"

भगवान के दर्शन करते समय मीनाक्षी ने गहनों के साथ अपने पति के दिये एक हज़ार रुपये हुंडी में डाल दिये। इसे देखे बिना प्रभुगुप्त ने भी एक हज़ार रुपये हुंडी में डाल दिये।

दोनों मंदिर से जब बाहर आये, तब प्रभुगुप्त ने मीनाक्षी से कहा, "रुपये सावधानी से रखो। यहाँ पर सब चोर ही चोर फैले हुए हैं।"

"रुपये तो आपके पास हैं। मेरे पास जो थे, मैंने हुंडी में डाल दिये।" मीनाक्षी ने कहा।

उन्हें तुरंत गलती मालूम हो गई। इस पर

मीनाक्षी ने प्रभुगुप्त से कहा-''आपने भगवान के हिस्से में गलत हिसाब तो नहीं किया है न?''

प्रभुगुप्त ने लज्जित हो अपना सिर झुका लिया। दोनों के पास जो छुट्टे पैसे बचे, वे एक दिन के ख़र्च के लिए भी पर्याप्त नहीं थे। लौटते वक़्त रास्ते में उपवास करते, मौक़ा मिलने पर याचना करते, काफ़ी तक़लीफ़ें झेलते घर पहुँचे।

बहुत दिन बाद गाँव लौटे प्रभुगुप्त को देखने गाँव के कई लोग उसके घर आये। आश्चर्य की बात यह थी कि उनके रवाना होते समय जो बैरागी दिखाई दिया था, वह तब भी वहीं था।

बैरागी ने आगे बढ़कर प्रभुगुप्त से पूछा, ''अजी, आपकी यात्रा कुशलपूर्वक समाप्त हो गई न?''

प्रभुगुप्त ने खीझकर कहा, ''हाँ, हाँ! ठीक से हो गई! रास्ते भर भीख माँगते लौट आये।''

''यह बात तो आपने रवाना हाने के पहले ही कह दी थी न? अच्छा, अब मैं चला।'' यों कहते बैरागी चल पड़ा। ''बैरागी ने अपनी सीमा से ज़्यादा भलाई की, इसका उसे अच्छा पुरस्कार मिला!'' एक औरत ने आलोचना की।

''याने, तुम्हारा मतलब मैं नहीं समझा!'' प्रभुगुप्त ने कहा।

''बता दूँ? जब से तुम लोग तीर्थ पर गये हो, तब से वह बैरागी कुत्ते की तरह बेचारा तुम्हारे घर की रखवाली करता रहा। परसों रात को जब तुम्हारे घर में चोर सेंध लगाने जा रहे थे, तब बैरागी ने चिल्ला-चिल्लाकर सबको इकट्ठा किया। वरना तुम्हारी सारी संपत्ति चोर लूट लेते। लेकिन तुम लोग उस बैरागी को चोर मानते हो।'' औरत ने निंदा की।

''क़मबख़्त तीन कौड़ी के पुण्य ने हमारी सारी संपत्ति की रक्षा की।'' मीनाक्षी ने अपने पति की आँखों में देखते हुए कहा।

प्रभुगुप्त अपनी मूर्खता पर बहुत पछताया। उस दिन से वह दिल खोलकर दान देने लगा और अच्छा नाम भी कमाया।

जब जयानंद आश्चर्य कर रहा था कि बच्चे के माता-पिता को कहाँ ढूँढ़ा जाये, तभी उसका शिष्य मुकुंद जल्दबाजी में उधर आया।

गुरुजी, नदी किनारे एक स्त्री अचेत पड़ी है।

वह इस बच्चे की माँ होगी। जल्दी करो।

वह वहाँ है, गुरु जी !

थोड़ा जल लाओ। मेरा कमण्डलू ले जाओ।

मुकुंद स्त्री के चेहरे पर जल की छीटें मारता है।

उम्मीद है, यह जल्दी ही होश में आ जायेगी।

स्त्री आँखें खोलती है और बच्चे को देखती है। वह मुस्कुराती है।

तुम कौन हो, बेटी?

देवी ! कृपया इस शॉल पर सिर रखें।
बाबा, आपने मुझे बेटी कहा। कुछ समय के लिए यही मेरी पहचान बन जाने दीजिए।
कृपया मेरे बच्चे की देखभाल करें। मैं शायद न बचूँ !
स्वामी के कुछ कहने के पहले ही एक बार फिर वह बच्चे पर नजर डालती है और आँखें बंद कर लेती है।
गुरु जी, वह अब नहीं रही।
हाँ मुकुन्द, वह शरीर छोड़ चुकी है।

मुकुन्द, मैं स्नान करके आता हूँ। शरीर के चारों ओर इसका वातावरण होगा। मैं उसकी आत्मा से बात करूँगा। बच्चे को पकड़ो। ध्यान रखो कि यह मृत शरीर के निकट न जाये।
जयानंद जलप्रपात की ओर जाता है। स्नान के बाद वह ध्यान पर बैठ जाता है, तभी उसे अंतर्दृष्टि में स्त्री दिखाई पड़ती है।
मैं शांताकुमारी हूँ, शांतिपुर की रानी।
स्वामी मुकुन्द के पास लौटकर आता है, जहाँ मुकुन्द के पास एक और शिष्य आ चुका था।
गोविंद, शांतिपुर से कब लौटे?
मैं राजधानी से जल्दी लौटकर आ गया, गुरु जी, राजकुमार के जन्मदिवस का उत्सव विद्रोह के कारण भंग हो गया। राजा पर आक्रमण किया गया और राजकुमार के साथ रानी गायब है।
गायब? तब यह बच्चा राजकुमार हो सकता है और स्त्री रानी हो सकती है!

मुकुन्द, तुम्हारा अनुमान ठीक है। हम लोग कभी नहीं जान पायेंगे कि वे कैसे बच निकले। रानी शांताकुमारी चाहती है कि उसका बेटा समाधिस्थ करने के पहले उसके शरीर पर फूल रखे।
गुरुजी, मैंने सुना है कि राजा किले के पास से बहनेवाली नदी में कूद गया। लेकिन कुछ लोगों ने कहा कि सेनापति ने उसकी हत्या कर दी है।
गोविंद, मुकुन्द, इन सारी सूचनाओं को हमलोग राजकुमार की सुरक्षा के लिए अपने आप तक रखें। कौन जानता है, राजा बचकर नहीं निकल सका हो?
गुरुजी, क्या शरीर को अब समाधिस्थ कर दें?
हम लोग इसे कल करेंगे। मैं बाघा और बाघी को आज रात यहाँ रखवाली करने के लिए कह दूँगा।
क्रमशः

यह जंगल का एक कितना मनोहर दृश्य है ! इसमें कुछ और भी मज़ा है। अपनी पेंसिल निकालो और पता करो।

१. चित्र में भरो रंग

मटकू मंडूक प्रफुल्ल पद यात्रा पर है। रंग के छींटों से उसकी पदयात्रा को और रोचक बना दो।

२. सोनिया की सहायता करो

सोनिया सोनपंखी चिंतित है। उसकी बहन पेड़ के तने के अन्दर फँस गई है। भुलभुलैया से होकर उसके पास पहुँचने में उसकी सहायता करो। बीच में उसे कीट से बचकर जाना चाहिए।
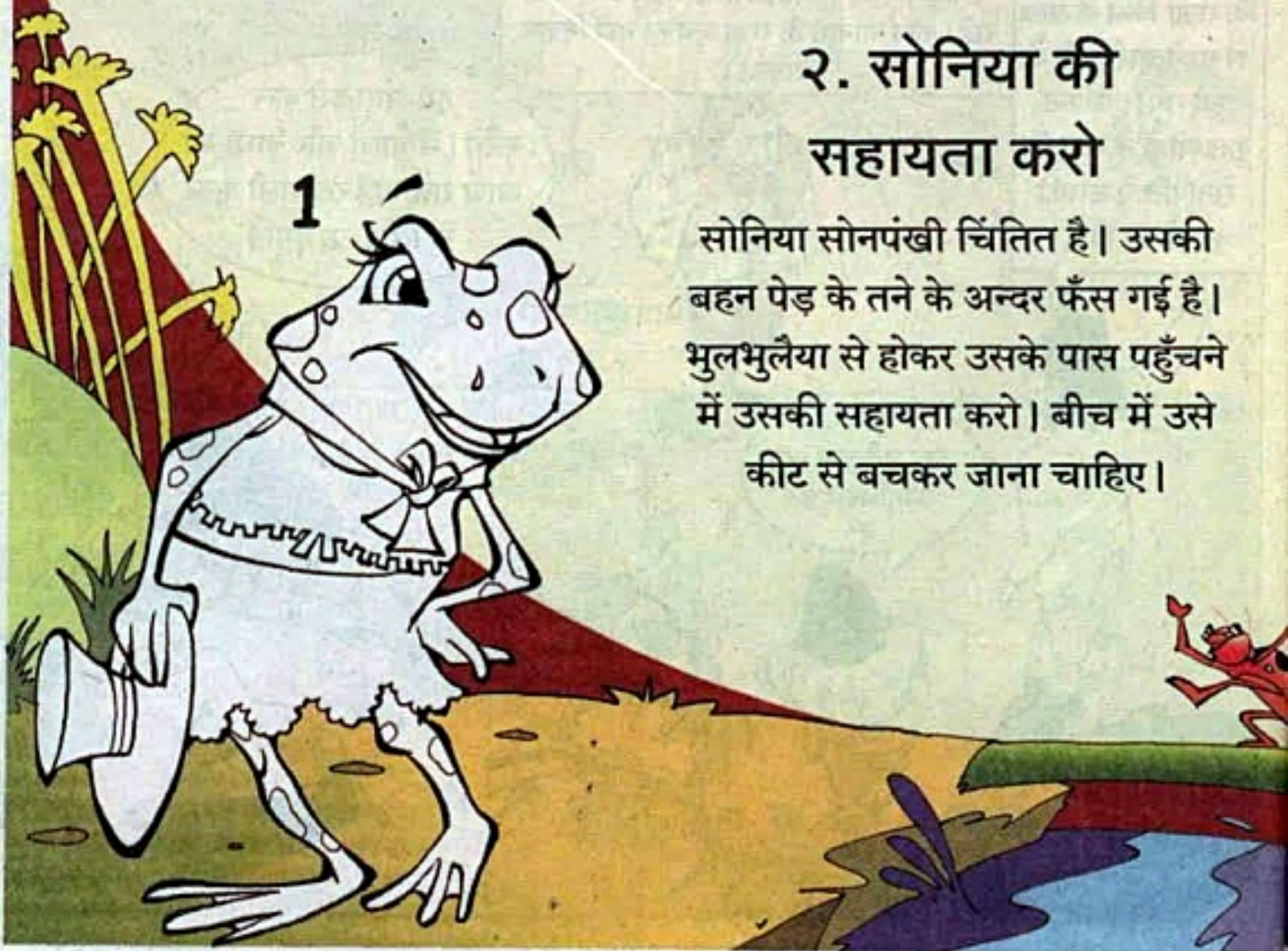
३. बेमेल को करो बाहर

गिल्ली इल्ली ढेर सारी पत्तियाँ चबा गई। वह खाने के बाद हर पत्ती पर एक पैटर्न छोड़ गई। एक पत्ती का पैटर्न दूसरों से भिन्न है। वह कौन-सी है?

४. आँख मिचौनी

फूलों के बीच एक कीड़ा छिपा है। क्या तुम उसे ढूँढ सकते हो?

(उत्तर - पृष्ठ ६६ पर)

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा
चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक
दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

VICKY MANOHAR

SOURAA

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,
प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई -६०० ०९७.
जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए । सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/-रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा ।

बधाइयाँ

अगस्त अंक के पुरस्कार विजेता हैं :

रामस्वार्थ आचार्य
चौथी मंज़िल, १, वनिता सदन,
पडवाल नगर, वाग्ले रोड-८,
थाने (पश्चिम) - ४०० ६०४.

विजयी प्रविष्टि

गोदान करने के लिए काफी नहीं है हाय! ये।
तूलिका टूटी हुई है रंग भी सूखे हुए ।।

मनोरंजन टाइम्स के उत्तर (पृष्ठ-६४-६५)

३. *बेमेल को करो बाहर :* D बेमेल है

४. *आँख मिचौनी :* कीड़ा "b" फूल में छिपा है।

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 600 026 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor : Viswam

FOR MOTHERS

A CONTEST WITH A DIFFERENCE !

Theme : A true incident in the early years (6–9) of her child (in 250 – 300 words)

Prize : Educational endowment in the name of the child in the form of National Savings Certificate

One First Prize : Endowment for Rs.10,000

Two Second Prizes : Endowment for Rs. 5,000 each

Look for entry form and more details in

October 2003 issue